पंडित हरिराम द्विवेदी को भाषा सम्मान प्रदान करते हुए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी। साथ में हैं डॉ. के. श्रीनिवासराव

भजन गायन से हुई। इसके बाद श्री गोविंद शुक्ल ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। इसके बाद साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में संत तुकाराम की लोकप्रिय उक्ति 'शब्द ही एकमात्र गहने हैं, जिन्हें मैं पहनता हूँ' को संदर्भित करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी प्रादेशिक भाषाओं और बोलियों के बहुमूल्य साहित्य पर विचार करती है। उन्होंने कहा कि लिपियों की अनुपस्थिति के बावजूद लघुक्षेत्रीय भाषाओं और अधिसंख्य बोलियों में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा पाई जाती है तथा वाचिक परंपराएँ प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय साहित्य का हिस्सा हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा भाषा सम्मान की शुरुआत इन्हीं भाषाओं के साहित्य के उन्नयन के लिए की गई है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने इस अवसर पर अपना अध्यक्षीय भाषण भोजपुरी भाषा में ही दिया। उन्होंने कहा कि भोजपुरी का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और इसके विविध रूप हैं। उन्होंने पंडित हरिराम द्विवेदी की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए कहा कि वे केवल कविता लिखते हैं, इसलिए वे विशुद्ध रूप से कवि हैं और उनकी काव्याभिव्यक्ति उतनी ही विनीत है, जितनी कि गोस्वामी तुलसीदास की है। द्विवेदी की कविताओं के लोक सौंदर्य को कोई भी अनुभव कर सकता है। यह गेय है और आंतरिक भावनाओं और संवेदनाओं की परिणति है। उन्होंने प्रायः सभी लोकधुनों में काव्य रचना की है।

पंडित हरिराम द्विवेदी को भाषा सम्मान का उत्कीर्ण ताम्र फ़लक और एक लाख रुपये की राशि का चेक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रदान किया गया, जबकि प्रशस्ति पाठ डॉ. के. श्रीनिवासराव ने किया।

पं. हरिराम द्विवेदी ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में कहा कि भोजपुरी मेरी मातृभाषा है। बचपन से ही मुझे भोजपुरी गाने पसंद थे। उन्होंने बताया कि वे अपनी माँ के साथ विभिन्न विवाह समारोहों और पारंपरिक उत्सवों में सिर्फ़ इसलिए जाते थे, ताकि उन अवसरों पर गाए जानेवाले गीतों को सुन सकें। बाद में अपने पिता द्वारा हतोत्साहित किए जाने के बावजूद उन्हें तीव्र अनुभूति हुई कि वे भी ऐसे गीत लिख सकते हैं; और इस प्रकार उनके भीतर के कवि का जन्म हुआ। उन्होंने कहा कि मातृभाषा भोजपुरी में लिखने को लेकर उनके भीतर किसी प्रकार की हीन भावना कभी नहीं आई। उन्होंने इस लोकभाषा को न केवल अनुभव किया है, बल्कि जीया भी है। पंडित द्विवेदी ने इस अवसर पर अपने कुछ भोजपुरी गीत भी सुनाए।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी, डॉ. दयानिधि मिश्र, प्रो. सदानंद शाही, प्रो. वशिष्ठ अनूप, डॉ. नीरजा माधव, डॉ. रामसुंदर सिंह, डॉ. कमलाकर त्रिपाठी, रामावतार पांडेय, मूलचंद सोणकर, जवाहरलाल कौल, वाचस्पति, मुक्ता, मंजुला चतुर्वेदी, प्रो.

श्रद्धानंद, प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, गोरखनाथ, अशोक आनंद, गौतम अरोड़ा, डॉ. सलीम राही, प्रो. राजेंद्र आचार्य जैसे प्रतिष्ठित लेखकों, विद्वानों और पत्रकारों की गरिमामय उपस्थिति रही।

5 अक्टूबर 2014, तिरुवअनंतपुरम

साहित्य अकादेमी द्वारा एक भव्य समारोह का आयोजन 5 अक्टूबर 2014 को कानाकाकुन्नु पैलेस, तिरुवअनंतपुरम में किया गया जिसमें उन विद्वानों को भाषा सम्मान से नवाज़ा जाता है, जिन्होंने कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य को संरक्षण देने और छोटी भाषाओं एवं बोलियों को संरक्षण देने के लिए अनुकरणीय योगदान दिया है।

कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में योगदान के लिए पुथुसेरी रामचंद्रन एवं सुमेरचंद केसरी चंद जैन को भाषा सम्मान प्रदान किया गया। विश्वनाथ त्रिपाठी को मध्यकालीन भक्ति कविता में उनके योगदान के लिए यह सम्मान दिया गया। छोटी भाषा एवं बोलियों की श्रेणी में वार्ली भाषा की साहित्यिक विरासत को संरक्षित करने के प्रयास के लिए महादेव सावजी मांथेर (मरणोपरांत) को सम्मानित किया गया।

सचिव, साहित्य अकादेमी के. श्रीनिवासराव ने सम्मानित विद्वानों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संक्षेप में भारत की सभी बड़ी एवं छोटी भाषाओं में निहित साहित्य को संरक्षित एवं बढ़ावा देने में अकादेमी के प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने सभी छोटी भाषाओं एवं बोलियों में उनके अद्भुत योगदान के लिए इस वर्ष के लिए सभी पुरस्कार विजेताओं के प्रयासों की प्रशंसा की।

अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये नक़द तथा स्मृति चिह्न प्रदान किए। श्री तिवारी ने उन बोलियों के साहित्य की प्रासंगिकता एवं संरक्षण के बारे में बात की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में यह कहा कि 2014 के सम्मानित ये लोग गुरु हैं और जो सम्मान प्राप्त किये हैं वे इसके योग्य हैं।

इस शाम की मुख्य अतिथि श्रीमती सुगाता कुमारी प्रसिद्ध कवयित्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता ने राष्ट्र की आत्मा को बनानेवाले रीति-रिवाज, संस्कृति और संस्कार

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं सचिव तथा कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सुगाता कुमारी के साथ भाषा सम्मान पुरस्कार विजेता

के साथ समृद्ध और विविध भाषाओं के कैसे संगम हैं, के बारे में बात की।

पुरस्कार ग्रहण करते हुए पुथुसेरी रामचंद्रन ने कहा कि मैं अकादेमी द्वारा दिये गये इस पुरस्कार एवं सम्मान के लिए बहुत खुश हूँ, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मध्यकालीन साहित्य, विशेष रूप से मलयाळम् साहित्य में और अधिक शोध की ज़रूरत है।

रामचंद्र रमेश आर्य ने भाषाओं की तुलना विभिन्न फूलों के गुलदस्ते से की और साहित्य अकादेमी के प्रति इस दिशा में किए गए कार्य के प्रति आभार व्यक्त किया। ललिथंगलियाना ने कहा कि वे यह पुरस्कार पाकर बहुत उत्साहित हैं और यह इस बात का सूचक है कि लोग अभी जनजातीय भाषाओं को भूले नहीं हैं। महादेव सावजी अंधेर के पुत्र ने अपने पिता जी की अनुपस्थिति में उनका पुरस्कार प्राप्त किया जबकि विश्वनाथ त्रिपाठी तथा सुमेरचंद केसरीचंद अस्वस्थता के कारण पुरस्कार समारोह में उपस्थित न हो सके।

मलयाळम् भाषा परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। समारोह में गणमान्य लेखक और मीडिया के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

श्रोताओं के समक्ष डॉ. त्रिपाठी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया तथा इस अवसर विशेष के लिए तैयार किया गया प्रशस्ति पाठ किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने डॉ. त्रिपाठी के जीवन एवं कृतित्व पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किए तथा उनसे जुड़े कुछ संस्मरण भी सुनाए। प्रो. तिवारी ने साहित्य अकादेमी की ओर से डॉ. त्रिपाठी को पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपए की राशि का चैक, एक शॉल तथा एक ताम्रफ़लक प्रदान किया।

डॉ. त्रिपाठी ने मध्यकालीन भक्ति साहित्य के क्षेत्र में, विशेषरूप से तुलसीदास तथा मीराबाई की रचनाओं पर काफी महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। इस सम्मान से पहले डॉ. त्रिपाठी को व्यास सम्मान, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार तथा साहित्यकार सम्मान आदि से विभूषित किया जा चुका है। उनकी उल्लेखनीय कृतियों में *प्रारंभिक अवधी, लोकवादी तुलसीदास, व्योमकेश दरवेश, देश के इस दौर में* तथा *पेड़ का हाथ* शामिल हैं।

अंत में साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए हिंदी साहित्य में डॉ. त्रिपाठी के योगदान को रेखांकित किया।

18 दिसंबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 18 दिसंबर 2014 को अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में दिए गए महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए वर्ष 2014 का भाषा सम्मान प्रदान किया गया।

आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को भाषा सम्मान प्रदान करते हुए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी। साथ में हैं डॉ. के. श्रीनिवासराव (बाएँ) तथा प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित (दाएँ)

अकादेमी महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

नेपाली लेखक असीत राई को महत्तर सदस्यता

साहित्य अकादेमी द्वारा 20 जून 2014 को दार्जीलिङ में प्रख्यात नेपाली उपन्यासकार, कवि, साहित्येतिहासकार और आलोचक श्री असीत राई को अकादेमी के सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से विभूषित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सोनू राई की प्रस्तुति सरस्वती वंदना से हुई।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने समुपस्थित विद्वानों और साहित्य-प्रेमियों का औपचारिक स्वागत करते हुए श्री असीत राई के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने इस अवसर विशेष के लिए मुद्रित प्रशस्ति का पाठ भी किया; और बताया कि श्री राई के उन्नीस उपन्यास, पाँच कहानी-संग्रह, चार कविता-संग्रह, चार आलोचना और साहित्येतिहास की पुस्तकें तथा पाँच अन्य कृतियाँ प्रकाशित हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं प्रख्यात हिंदी कवि-आलोचक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने श्री राई को महत्तर सदस्यता का ताम्र फ़लक प्रदान किया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में भारतीय साहित्य में श्री राई के योगदान को विशिष्ट बताते हुए मानव समाज में साहित्य के महत्त्व पर अपने विचार रखे।

अपने स्वीकृति वक्तव्य में श्री असीत राई ने अपने वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने कहा, ''कल सम्मान और पुरस्कार नहीं थे, परंतु साहित्य अवश्य था, समर्पित साहित्य साधक थे। 'सृजन' को सक्रियता देने हेतु आज ये सम्मान और पुरस्कार की

श्री असीत राई को अकादेमी की महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
बाएँ से दाएँ : सर्वश्री शंकर देव ढकाल, प्रेम प्रधान, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, असीत राई, जीवन नामदुङ एवं के. श्रीनिवासराव

परंपरा शुरू हुई है। साहित्य को उन्नत, समृद्ध बनाने का ये महान कार्य प्रशंसनीय और सराहनीय है।'' उनके वक्तव्य के बाद विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक संस्थाओं और व्यक्तियों ने खादा-अर्पण कर उनका अभिनंदन किया।

महत्तर सदस्यता अर्पण के पश्चात् श्री असीत राई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने की। कार्यक्रम में श्री जीवन नामदुंग, श्री शंकर देव ढकाल और श्री गोकुल सिन्हा ने अपने वक्तव्य रखे। उन्होंने श्री राई के इस अभिनंदन-सम्मान के लिए अकादेमी की सराहना की।

श्री ढकाल ने पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से श्री राई की साहित्यिक यात्रा को रेखांकित किया। श्री नामदुंग ने एक प्रगतिशील लेखक के रूप में श्री राई का मूल्यांकन करते हुए उनकी साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण किया; और विशेष रूप से अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उनके उपन्यास 'नया क्षितिजको खोज' को संदर्भित किया। श्री सिन्हा ने भी श्री राई के साहित्यिक अवदान पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रेम प्रधान ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों के साथ श्री राई के सृजनात्मक जुड़ाव को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि नेपाली साहित्य को उनके योगदान से भारतीय साहित्य समृद्ध हुआ है।

समारोह के अंत में अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदी लेखक अभिमन्यु अनत को मानद महत्तर सदस्यता

साहित्य अकादेमी ने मॉरिशस के प्रख्यात हिंदी लेखक डॉ. अभिमन्यु अनत को 26 अगस्त 2014 को नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त की।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने डॉ. अनत तथा दिल्ली के प्रख्यात लेखकों एवं विद्वानों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा संक्षेप में डॉ. अनत के जीवन एवं कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने श्रोताओं को यह भी बताया कि अकादेमी उन प्रख्यात लेखकों एवं विद्वानों को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करती है, जो भारत से बाहर देशों में रहते हुए भी भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित एवं उसके विकास के लिए अपना योगदान देते हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि वह डॉ. अनत को यह सम्मान प्रदान करते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. अनत के लेखन-कार्य हिंदी पाठकों की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं तथा उन्होंने बताया कि उनके लेखन में न सिर्फ़ मॉरिशस बल्कि विश्वभर में भारतीय समुदाय द्वारा सही जानेवाली कठिनाइयाँ, संकट तथा पीड़ाएँ प्रतिबिंबित होती हैं। उनका लेखन पिछली सदी में किसी भी भाषा में लिखे जानेवाले प्रवासी साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति–पाठ पढ़ा तथा डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने डॉ. अनत को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान की।

अपने स्वीकृति वक्तव्य में डॉ. अनत ने कहा कि जब उन्होंने अब से पचास वर्ष पूर्व लेखन-कार्य प्रारंभ किया था, तब उन्होंने यह सोचा भी नहीं था कि उन्हें इस प्रकार का कहीं से सर्वोच्च सम्मान प्राप्त होगा तथा उन्होंने साहित्य अकादेमी का उन्हें इस सम्मान के लिए

डॉ. अभिमन्यु अनत को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
बाएँ से दाएँ : के. श्रीनिवासराव, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अभिमन्यु अनत एवं उनकी पत्नी

चुने जाने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान न केवल उनके लिए है वरन् यह विश्वभर के समस्त सीमांत लोगों के लिए है। उन्होंने कहा कि अब तक उन्होंने जो लिखा है उसमें से बहुत कुछ अभी और भी लिखा जाना शेष है तथा उन्हें भी इस बात का आभास है कि उन्होंने अभी तक वह नहीं लिखा, जिसे वह लिखना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि यह सम्मान उन्हें इस बात का एक बार फिर से स्मरण दिलाता है कि सर्जनात्मक कार्य उन्हें सर्जित करनेवालों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं तथा आज जिस जीवन को हम जी रहे हैं, वह केवल हमसे पहले जीने वालों के ख़ून-पसीने पर खड़ा है। जीवन अविच्छिन्न है तथा किसी को भी यह कहने का अधिकार नहीं है कि सब उनका है। यह सम्मान मुझे दृढ़ता से प्रेरित करता है कि मैं अपनी मातृभाषा हिंदी में अपनी अंतिम श्वास तक निरंतर लिखता रहूँ। उन्होंने अपने असंख्य पाठकों, समालोचकों, अपने विगत पचास वर्षों के प्रकाशकों तथा अपने साथी लेखकों, जिन्होंने उन्हें सदैव लिखने के लिए प्रेरित किया के प्रति भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने अपने लेखन-कार्यों के कुछ उद्धरण भी पढ़कर सुनाए।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन

'नागा वाचिक साहित्य' पर परिसंवाद

4-5 अप्रैल 2014, कोहिमा

साहित्य अकादेमी के पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य केंद्र, अगरतला द्वारा टेनिडे एवं भाषाविज्ञान विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 4-5 अप्रैल 2014 को विश्वविद्यालय परिसर, कोहिमा में 'नागा वाचिक साहित्य' विषयक द्वि-दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन नागालैंड विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. ए. लनुङसाङ द्वारा किया गया। उन्होंने अपने भाषण में इतने महत्त्वपूर्ण विषय पर परिसंवाद के आयोजन के लिए प्रसन्नता व्यक्त की और विद्यार्थियों से नागालैंड के वाचिक साहित्य के संग्रह और संरक्षण की दिशा में कार्य करने की अपील की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. तेमसुला आओ ने की, जबकि बीज वक्तव्य प्रो. डी. कुओली द्वारा दिया गया। सत्रांत में डॉ. मिमि के. एजुङ द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया गया। प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए. जे. सेबस्टियन द्वारा की गई। इस सत्र में डॉ. केविज़ोनुओ कुओली, विबोलहुनो पुण्यु, चिङाङ कोण्यक, केरैविलै किरे, वी. ऋता क्रौचा और पेटेखिएनुओ सोर्ही ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. मिमि के. एजुङ द्वारा की गई। इस सत्र में पाँच विद्वानों द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। तृतीय सत्र में निगमानंद दास की अध्यक्षता में पाँच आलेखों का पाठ हुआ। चतुर्थ सत्र प्रो. डी. कुओली की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें छह आलेख पढ़े गए। परिसंवाद के अंत में टेनिडे विभाग के प्रो. के. बेल्हो ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

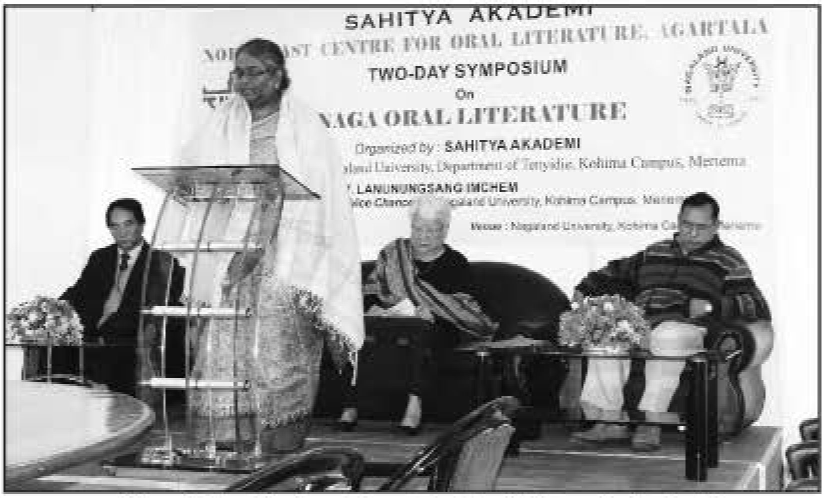

व्याख्यान देते हुए परिसंवाद में पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य केंद्र की निदेशक मीनाक्षी सेन बंद्योपाध्याय

'अरबी मलयाळम् और माप्पिळ पाट्टु' पर परिसंवाद

17 अप्रैल 2014, कोंडोट्टी

साहित्य अकादेमी द्वारा महाकवि मोईनकुट्टी वैद्यर माप्पिळ कला अकादेमी के संयुक्त तत्त्वावधान में 17 अप्रैल

2014 को वैद्यर मेमोरियल ट्रस्ट हॉल, कोंडोट्टी में 'अरबी मलयाळम् और माप्पिळ पाट्टु' विषयक एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन अकादेमी में मलयाळम् भाषा परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन ने किया। उन्होंने कहा कि शिक्षित व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे अपनी भाषा और संस्कृति की आधारभूत बातों को जानें और उनकी सराहना करें। प्रारंभ में डॉ. शमसाद हुसैन ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। केरल फ़ॉकलोर अकादमी के अध्यक्ष प्रो. मुहम्मद अहमद ने बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए सांप्रदायिक सद्भाव के लिए साझी हिंदू-मुस्लिम संस्कृति के विकास को ज़रूरी बताया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए माप्पिला कला अकादमी के अध्यक्ष श्री सी.पी. सैथालवी ने अपने भाषण में कहा कि हमारी संस्कृति से सुपरिचित होने के लिए अरबी मलयाळम् का अध्ययन ज़रूरी है। इस अवसर पर श्री ए. के. अब्राहिमन, श्री के. वी. अबुट्टी और श्री कणेश पूनुर ने भी अपने विचार प्रकट किए। श्री असद वांदूर ने सत्रांत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. एम. एन. करास्सेरी द्वारा की गई, जिसमें डॉ. इलियास एच. एच., श्री के. सेतुरामन, डॉ. पी. ए. अबूबकर और डॉ. के. एम. शेरिफ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने अरबी मलयाळम् के इतिहास और इसकी विकास यात्रा के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र श्री पी. के. परक्कडवु की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. राघवन पयानंद, डॉ. उम्मेर थराम्मेल, डॉ. पी. पवित्रन और डॉ. शेरिन बी. एस. ने अपने आलेखों का पाठ किया। इस सत्र के वक्ताओं ने माप्पिळ पाट्टु के कृतित्व का विश्लेषण करते हुए उनके महत्त्व को रेखांकित किया।

'संजयन का हास्य-व्यंग्य लेखन' पर परिसंवाद
4 मई 2014, पयान्नुर

साहित्य अकादेमी द्वारा संजयन स्मारक ग्रंथालयम के संयुक्त तत्त्वावधान में 4 मई 2014 को ग्रंथालय भवन, पयान्नुर में 'संजयन का हास्य-व्यंग्य लेखन' विषयक एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए प्रो. एम. थॉमस मैथ्यु ने कहा कि संजयन मलयाळम् भाषा के श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य लेखकों में से एक हैं। अपने लघु जीवन में भी उन्होंने विभिन्न विधाओं में प्रचुर लेखन किया। आरंभ में अकादेमी के बेंगळूरु कार्यालय प्रभारी श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने आमंत्रित विद्वानों और सभागत साहित्य प्रेमियों का औपचारिक स्वागत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मलयाळम् भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन् द्वारा की गई। उन्होंने संजयन की विशिष्ट शैली को रेखांकित करते हुए बताया कि किसी प्रकार उनकी परवर्ती लेखक पीढ़ी ने उनसे प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण किया। अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. के. एस. रविकुमार ने परिसंवाद का बीज-भाषण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्री भास्कर पोदुवल ने भी अपने विचार व्यक्त किए, जबकि सत्रांत में श्री पी. कम्मर पोदुवल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। विचार सत्र क्रमशः श्री सी. राधाकृष्णन और श्री पी. के. परक्कडवु की अध्यक्षता में संपन्न हुए, जिनमें श्री सी. पी. राजशेखरन, डॉ. ई. पी. राजगोपालन, श्री टी. एन. प्रकाश और श्री रमनकुट्टी ने संजयन के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'राजस्थानी साहित्यालोचना' विषयक संगोष्ठी
31 मई–1 जून 2014, जोधपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा 31 मई एवं 1 जून 2014 को 'राजस्थानी साहित्यालोचना' पर केंद्रित एक द्वि-दिवसीय

संगोष्ठी का आयोजन जोधपुर, राजस्थान में किया गया। चार सत्रों में विभाजित इस संगोष्ठी का उद्घाटन अकादेमी में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने किया। उन्होंने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भी की। आरंभ में अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मनजीत कौर भाटिया ने औपचारिक स्वागत किया, जबकि सत्रांत में श्री गजसिंह राजपुरोहित ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. किरण नाहटा की अध्यक्षता में संपन्न प्रथम सत्र में डॉ. कुंदन माली, डॉ. चेतन स्वामी और डॉ. मंगत बादल ने अपने आलेख पढ़े। दुलाराम सहारण ने सत्र का संचालन किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अंबिका दत्त ने की। इस सत्र में श्री कुमार अजय, श्री ओम नागर और डॉ. धनंजय अमरावती ने अपने आलेख पढ़े। सत्र का संचालन डॉ. राजेश कुमार ने किया।

तृतीय सत्र डॉ. नरपत सिंह सोधा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री गजसिंह राजपुरोहित, डॉ. राजेंद्र बारहठ और डॉ. मीठा शर्मा ने अपने आलेखों का पाठ किया। इस सत्र का संचालन श्री कुंदन माली ने किया।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता मधु आचार्य ने की, जिसमें श्री श्याम महर्षि और श्री मालचंद तिवाड़ी ने अपने आलेख पढ़े। संगोष्ठी के अंत में समाहार वक्तव्य देते हुए डॉ. अर्जुन देव चारण ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी और सुकुमार राय' पर संगोष्ठी

4-5 जून 2014, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी की 150वीं तथा सुकुमार राय की 125वीं जयंती के अवसर पर 4-5 जून 2014 को दोनों लेखकों पर केंद्रित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन अकादेमी सभागार, कोलकाता में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात बाङ्ला लेखक प्रो. मानवेंद्र बंद्योपाध्याय द्वारा किया गया। उन्होंने आबोल ताबोल की राजनीतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि पर बात करते हुए दोनों बालसाहित्यकारों के योगदान पर प्रकाश डाला। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए दोनों बालसाहित्यकारों का संक्षिप्त साहित्यिक जीवनवृत्त प्रस्तुत किया और उनके महत्त्व को रेखांकित किया। अपने बीज भाषण में इन लेखकों की वर्तमान पीढ़ी के पारिवारिक सदस्य श्री प्रसादरंजन राय ने उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी की संगीतमय रचनाओं तथा सुकुमार राय की सरस शैली का उल्लेख किया। अकादेमी में बाङ्ला भाषा परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने उपेंद्रकिशोर के निधन के पश्चात् सुकुमार राय द्वारा लिखित निबंध तथा सुकुमार राय के निधन के पश्चात् रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा दिए गए वक्तव्य को संदर्भित करते हुए बालसाहित्य के क्षेत्र में पिता-पुत्र के विशिष्ट योगदान पर प्रकाश डाला। सत्रांत में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी और उनका समय' पर केंद्रित प्रथम सत्र प्रो. विश्वनाथ राय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें प्रो. अमल कुमार पॉल और श्री हेमंत कुमार आद्य ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. पॉल ने तत्कालीन बालपत्रिकाओं पर अपने विचार रखे, जबकि श्री आद्या ने उपेंद्रकिशोर की संक्षिप्त जीवनयात्रा पर प्रकाश डाला। प्रो. राय ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य कला और विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में राय परिवार के सदस्यों के योगदान की चर्चा की। द्वितीय सत्र उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी के कृतित्व पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. वारिदवरण घोष ने की। इस सत्र में श्री कार्तिक घोष, प्रो. सुमिता चक्रवर्ती और श्री देवाशीष मुखोपाध्याय ने

श्रोताओं का स्वागत करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव

अपने विचार रखे। प्रो. घोष ने कहा कि उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी बच्चों के मनोविज्ञान से भली-भाँति परिचित थे।

तृतीय सत्र 'उपेंद्रकिशोर और अन्य कला माध्यम' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री हीरन मित्र ने की। इस सत्र में श्री देवाशीष देव और श्री सर्वानंद चौधरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने चित्रकला, और संगीत के क्षेत्र में उपेंद्रकिशोर के योगदान और महत्त्व को रेखांकित किया। चतुर्थ सत्र 'संपादक और मुद्रक के रूप में उपेंद्रकिशोर' विषय पर केंद्रित था। श्री आशीष खास्तगीर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में श्री देवाशीष बंद्योपाध्याय ने बालसाहित्य पत्रिका *संदेश* के संपादक के रूप में उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी के योगदान का समाकलन प्रस्तुत किया, जो अद्यतन प्रकाशित हो रही है। श्री शुभेंदु दासमुंशी ने 'उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी : चित्रकार बनाम मुद्रक' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन के सत्र क्रमशः 'सुकुमार राय और उनका समय' तथा 'सुकुमार राय : उनके शब्द और कला' विषयों पर केंद्रित थे, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः श्री अमित्रसूदन भट्टाचार्य और श्रीमती ईशा दे ने की। इन सत्रों में श्री अशोक कुमार मित्र, श्री श्यामलकांति दास, प्रो. कृष्णरूप चक्रवर्ती, श्री मृणाल घोष और श्री पलाशवरण पाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने सुकुमार राय के जीवन, तत्कालीन परिस्थितियों और उनके कृतित्व के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करने तथा बाङ्ला बालसाहित्य के इतिहास में उनके महत्त्व को रेखांकित करने के सफल प्रयत्न किए। संगोष्ठी के अंत में श्री गौतम पॉल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कश्मीरी काव्यशास्त्र' विषयक संगोष्ठी

7-8 जून 2014, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी द्वारा कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 7-8 जून 2014 को 'कश्मीरी काव्यशास्त्र' विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर, श्रीनगर में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. एम. शाह द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि हम अपनी भाषा का संरक्षण अपनी आगामी पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक विरासत का भाषायी रूपांतरण करके ही कर सकते हैं। प्रारंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए भारतीय साहित्यशास्त्र के विकास में कश्मीरी कविता के

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए श्री ए.एम. शाह

योगदान को रेखांकित किया। अपने बीज भाषण में डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने लल द्यद से लेकर रहमान राही तक को संदर्भित करते हुए कश्मीरी काव्यशास्त्र के विकास को रेखांकित किया। प्रो. शाद रमज़ान ने कश्मीरी साहित्य के गौरवमय अतीत का बखान करते हुए सूफ़ी काव्यधारा पर विशेष रूप से अपने विचार रखे। प्रो. ज़मान आज़ुर्दा ने कश्मीरी साहित्य के विभिन्न काव्यशास्त्रियों को संदर्भित करते हुए काव्यशास्त्र की अविरल विकास यात्रा को रेखांकित किया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रहमान राही ने कश्मीरी कविता को प्रभावित करनेवाली दर्शन की विभिन्न धाराओं को संदर्भित करते हुए अपनी बात रखी।

अगले दिन आयोजित प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता श्री जी. एन. गौहर द्वारा की गई। इस सत्र में सतीश विमल, इक़बाल नाज़्की और मरगूब बनिहाली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में पठित आलेखों पर बृजनाथ बेताब ने अपने विचार रखे। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाद रमज़ान द्वारा की गई, जिसमें गुलाम नबी आतिश, वली मोहम्मद असीर, मुफ़ुजा जान और बशर बशीर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आलेखों पर इनायत गुल ने अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की।

तृतीय सत्र प्रो. मज़रूह राशिद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें फारूक़ फयाज़, रंजूर तेलगामी और ज़मीर अंसारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आलेखों पर शबीर अहमद मीर ने अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की। चतुर्थ और अंतिम सत्र प्रो. मो. ज़मान आज़ुर्दा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें शाद रमज़ान ने अपना आलेख पढ़ा, जबकि आर. के. भट की अनुपस्थिति में उनका आलेख अध्यक्ष द्वारा पढ़ा गया।

'दक्षिण भारतीय भाषाओं की कहानियों की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

10 जून 2014, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी द्वारा 10 जून 2014 को नयना सभागार, कन्नड भवन, बेंगळूरु में 'दक्षिण भारतीय भाषाओं की

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए डॉ. चंद्रशेखर कंबार

कहानियों की प्रवृत्तियाँ' विषयक एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार द्वारा किया गया। उन्होंने दक्षिण भारतीय भाषाओं में कहानी लेखन की स्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इन भाषाओं में ही नहीं, बल्कि प्रायः सभी भाषाओं में एक विशेष प्रवृत्ति लोकसाहित्य से प्रभाव ग्रहण की पाई जाती है। इस अवसर पर अकादेमी में मलयाळम् भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने समकालीन मलयाळम् कथा परिदृश्य के विशेष संदर्भ में अपनी बात कही। प्रथम सत्र में श्री एस. आर. विजयशंकर ने 'कन्नड कहानियों की समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषयक आलेख प्रस्तुत किया, जबकि कन्नड कथाकार डॉ. के. सत्यनारायण ने अपनी कहानी का पाठ किया। द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ सत्र क्रमशः मलयाळम्, तमिऴ एवं तेलुगु कहानियों पर केंद्रित थे। श्री ई. पी. राजगोपाल ने 'मलयाळम् कहानियों की समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषयक आलेख का पाठ किया, जबकि श्री इंद्र मैनुएल ने तमिऴ कहानियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रख्यात दलित लेखक श्री अषगीय पेरियवन ने अपनी तमिऴ कहानी 'वीचम' का पाठ किया। चतुर्थ सत्र में डॉ. मुक्तेवी भारती ने 1985 से 2010 तक की अवधि की तेलुगु कहानियों की प्रमुख प्रवृत्तियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए, जबकि श्री पी. अशोक कुमार ने अपनी तेलुगु कहानी 'भूमि मिंडा नीलु लेवु' का पाठ किया। परिसंवाद के अंत में अकादेमी के बेंगळूरु कार्यालय प्रभारी श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

समष्टि : काव्योत्सव

19-21 जून 2014, शिलाँग

साहित्य अकादेमी द्वारा सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक अध्ययन विभाग, नेहू, शिलाँग के संयुक्त तत्त्वावधान में 19-21 जून 2014 तक पूर्वोत्तर भारत की कविता और वाचिक परंपरा पर केंद्रित काव्योत्सव—समष्टि का आयोजन नेहू परिसर में किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. एस. के. नंदा द्वारा की गई, जबकि काव्योत्सव का उद्घाटन नेहू के कुलपति डॉ. प्रबोध शुक्ल ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन वक्तव्य के अंत में 'लोनलिनेस' शीर्षक अपनी कविता का पाठ भी किया।

आरंभ में अकादेमी के सहायक संपादक श्री शांतनु गंगोपाध्याय ने समागत कवियों, विद्वानों और साहित्य-प्रेमियों का औपचारिक स्वागत किया। अकादेमी के अंग्रेज़ी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. सच्चिदानंदन ने काव्योत्सव में 'कविता की चुनौतियाँ' शीर्षक आलेख का पाठ किया तथा आशा व्यक्त की कि

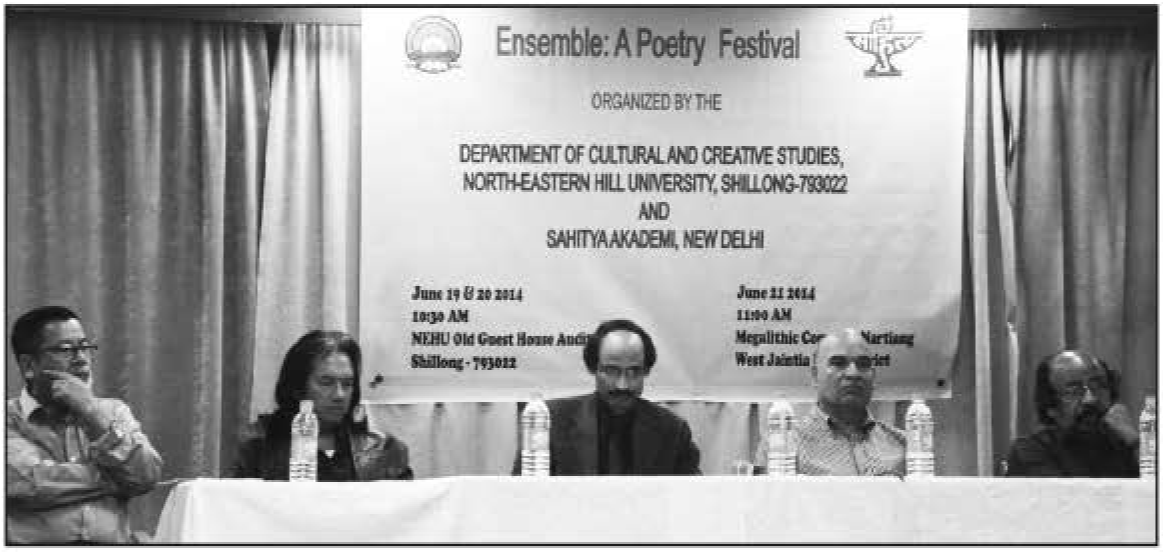

बाएँ से दाएँ सर्वश्री रॉबिन एस. नगंगम, डेज़्मंड एल. खर्माफ्लाङ, एस.के. नंदा, प्रबोध शुक्ल तथा के. सच्चिदानंदन

विभिन्न समृद्ध परंपराओं के संग्रह, संरक्षण, अनुवाद और प्रकाशन की दिशा में ठोस प्रयत्न किए जाएँगे।

सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक विभाग की तरफ़ से डेज़्मंड एल. खर्माफ्लाङ ने इस तीन दिवसीय काव्योत्सव के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। इस सत्र में तीन कविता पुस्तकों *ए मैप ऑफ़ रुइंस* (नवनीता क़ानूनगो), *मिडसमर सर्वाइवल लिरिक्स* (ममंग दई) एवं *ग्रीन टिन ट्रंक्स* (उद्दीपना गोस्वामी) का विमोचन भी किया गया।

पहले दिन विचार सत्र की अध्यक्षता ममंग दई ने की, जिसमें उद्दीपना गोस्वामी, नीटू दास और लाल्नुंसाङ राल्ते ने 'क्या कोई पूर्वोत्तरी संवेदना भी है?' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उद्दीपना गोस्वामी ने ऐसी अवधारणा को अनुचित बताया। नीटू दास ने कहा कि ऐसा सरलीकरण ठीक नहीं है, क्योंकि पूर्वोत्तर में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक वैविध्य है। लाल्ते ने अपने आलेख में इस विविधता का संपूर्णतः आकलन प्रस्तुत किया। काव्य पाठ सत्र में उद्दीपना गोस्वामी, निनि लुङलाङ, नीटू दास, लाल्नुंसाङ और भगत सिंह ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

दूसरे दिन 'सदमे के समय में कविता' विषयक विचार सत्र की अध्यक्षता प्रो. रॉबिन एस. नगंगम ने की। इस सत्र में मोनालिसा चाङकिजा, अनुराग रुद्र और नवनीता क़ानूनगो ने अपने विचार प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने पीड़ा और दुःख की अभिव्यक्ति के लिए कविता की भूमिका को व्याख्यायित किया।

कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रो. डेज़्मंड एल. खर्माफ्लाङ ने की। सलोनी ब्लाह, लुम्तिमाई, सियेम्लिह, रेनी रानी, प्रो. के. सच्चिदानंदन, मोनालिसा चाङकिजा, श्रीमा निङगोंबम, नवनीता दास, अनुराग रुद्र और रॉबिन एस. नगंगम ने इस सत्र में अपनी कविताओं का पाठ किया। अगले विचार सत्र की अध्यक्षता किनफाम सिंह नोंकिनरिह द्वारा की गई। विचार का विषय था : मातृभाषा में जीते हुए अंग्रेज़ी में लेखन। इस सत्र में सीमांत भट्टाचार्य, एस. शर्मा, एन. लुङलाङ ने अपने विचार व्यक्त किए। कविता पाठ के सत्र में सीमांत भट्टाचार्य, एस. शर्मा और डी. रिंताथियाङ ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

अंतिम दिन की शुरुआत कविता पाठ सत्र से हुई। इस सत्र में प्रो. के. सच्चिदानंदन, एस्थर सिएम, ममंग दई, ताशी चोफेल और इबोहोल क्षेत्रीमयूम ने अपनी कविताओं का पाठ किया। विचार सत्र का विषय था 'कविता और स्मृति'। इस सत्र की अध्यक्षता डेज़्मंड एल. खर्माफ्लाङ ने की, जबकि एस्थर सिएम, इबोहल क्षेत्रीमयूम, ममंग दई और ताशी चोफ़ेल ने अपने विचार प्रकट किए।

अंतिम कविता पाठ सत्र में डेज़्मंड एल. खर्माफ्लाङ, एस्थर सिएम, इबोहल क्षेत्रीमयूम, ममंग दई, ताशी चोफ़ेल, निनि लुङलाङ और फिनहुन मिकि सुसङी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। काव्योत्सव के अंत में समाहार करते हुए प्रो. के. सच्चिदानंदन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'तमिऴ कथाकार विंधन' पर परिसंवाद

25 जून 2014, चेन्नै

साहित्य अकादेमी द्वारा तमिऴ विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 25 जून 2014 को प्रख्यात तमिऴ कथाकार विंधन पर केंद्रित एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

बाएँ से दाएँ : वी. गीता, वी. अरासु, के. पाज़हानी तथा ए. एस. इलांगोवन

परिसंवाद का उद्घाटन सत्र अकादेमी के तमिऴ भाषा परामर्श मंडल की सदस्या श्रीमती वी. गीता की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उन्होंने अपने भाषण में समाजवादी चिंतनधारा के लेखक के रूप में विंधन का मूल्यांकन करते हुए कहा कि उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति व्यंग्य शैली में दिखाई देती है। इस अवसर पर प्रो. वी. अरासु ने बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए विंधन की साहित्यिक जीवन यात्रा को रेखांकित किया तथा तमिऴ कथा परिदृश्य में उनके योगदान और महत्त्व को प्रतिपादित किया। सत्रांत में डॉ. के. पाज़हानी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त लेखक श्री पोन्नीलन ने की। इस सत्र में डॉ. आर. संबथ और डॉ. कामराज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. संबथ ने फ़िल्म के लिए लिखे गए विंधन के पटकथा, संवाद और गीतों का आकलन किया, जबकि डॉ. कामराज ने उनकी श्रेष्ठ कृतियों का विश्लेषण करते हुए कहा कि वे वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक हैं। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सी. महेंद्रन ने की। इस सत्र में डॉ. ए. सतीश और डॉ. जे. शिवकुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. सतीश ने विंधन द्वारा लिखित जीवनी साहित्य का आकलन प्रस्तुत किया, जबकि डॉ. शिवकुमार ने उनके संस्मरणों पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री महेंद्रन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विंधन के संघर्षपूर्ण व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए कहा कि उनके संघर्ष ने उन्हें कहानी कहने की एक विशिष्ट कला और शिल्प दिया।

तृतीय सत्र प्रो. भारती पुथिरन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें कीरानुर ज़ाकिर रजा ने विंधन के लोकप्रिय उपन्यास *पालुम पषामुम* का विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री परवी ने भी विंधन के कृतित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

'साहित्यिक संस्कृति के संदर्भ' विषयक परिसंवाद

28 जून 2014, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा 28 जून 2014 को अकादेमी सभागार, मुंबई में 'साहित्यिक संस्कृति के संदर्भ' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात गुजराती लेखक प्रो. कांति पटेल ने कहा कि कोई भी साहित्यिक कृति एक निश्चित कालावधि में अस्तित्वमान रहती है और उसका मूल्यांकन अथवा सराहना उसके संदर्भों के कारण ही होती है। संदर्भ सौंदर्यशास्त्रीय, सामाजिक अथवा ऐतिहासिक कुछ भी हो सकते हैं। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि साहित्यिक पाठ अथवा कृति के व्यापक संदर्भ होते हैं, जैसेकि लेखक, उसका समय, उसके पाठक, परंपरा की उपस्थिति/ अनुपस्थिति तथा संस्कृति, धर्म अथवा राज्य का उस पर पड़नेवाले प्रभाव के तरीक़े। अकादेमी के मराठी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि किसी साहित्यिक कृति का सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यांकन साहित्यिक संस्कृति का आधारभूत तत्त्व है; और यह आंतरिक नहीं होता, बल्कि इतिहास द्वारा निर्धारित होता है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक प्रो. तानाजी हलर्नकर ने की। इस सत्र में श्री हासित मेहता (गुजराती), प्रो. एस. एम. ताड़कोडकर (कोंकणी), सुश्री अरुणा दुभाषी (मराठी) और श्री नामदेव ताराचंदाणी (सिंधी) ने अपने आलखों का पाठ किया। प्रो. ताड़कोडकर ने कहा कि संस्कृति और साहित्य दो अलग-अलग अवधारणात्मक संरचनाएँ हैं, जो एक-दूसरे से अंतर्संबंधित हैं तथा मानव जीवन में महती भूमिका निभाते हैं। सुश्री अरुणा ने कहा कि लेखक सामान्यतया समाज की नैतिकता, सोच, मूल्य और भाषिक, साहित्यिक परंपराओं से प्रभावित होता है। श्री ताराचंदाणी ने सिंधी भाषा की लिपि और पाठकीयता संबंधी मुद्दों के आलोक में अपने विचार रखे।

द्वितीय सत्र अकादेमी के सिंधी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री वसंत जोशी (गुजराती), प्रो. भूषण भावे (कोंकणी), डॉ. जगदीश पाटील (मराठी) और श्री मोहन गेहाणी (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. भावे ने कहा कि साहित्य में कालावधि, इतिहास, भूगोल,

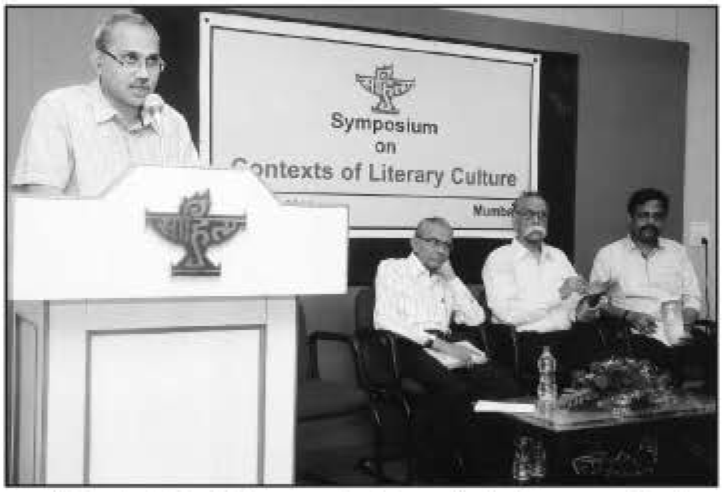

बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, कांति पटेल, भालचंद्र नेमाड़े तथा कृष्णा किंबाहुने

सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन, भावुक एवं बौद्धिक पहलुओं आदि का चित्रण होता है, जो विभिन्न शिल्प-शैलियों में अभिव्यक्त होते हैं। डॉ. पाटील ने कहा कि परंपरा से प्राप्त साहित्यिक संस्कृति में संदर्भ प्रमुख होते हैं और साहित्य के माध्यम से समाज को आईना दिखाते हैं।

'बोडो नाटक और बोडो बाल साहित्य' विषयक संगोष्ठी

26 जुलाई 2014, लांगहिन, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता ने करबी अंगलोंग ज़िला बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 26 जुलाई 2014 को लांगहिन, असम में "बोडो नाटक और बोडो बाल साहित्य" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं को पूर्वोत्तर के इस अत्यंत दुर्गम भूभाग, करबी अंगलोंग ज़िले में इस संगोष्ठी के आयोजन के महत्त्व के बारे में बताया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री भूपेन च. नर्ज़ारी ने अकादेमी द्वारा लांगहिन में इस साहित्यिक संगोष्ठी के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया तथा साथ ही यह आशा व्यक्त की कि इसके द्वारा इस क्षेत्र के युवाओं में साहित्य के प्रति और अधिक जागृति होगी।

बोडो साहित्य सभा के श्री बिस्वेश्वर बसुमतारी ने बोडो नाटकों के विकास के लिए सबका आह्वान किया तथा कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम उसके विकास के लिए उचित मंच है।

डॉ. बोरो ने अपने बीज-भाषण में आधुनिक तकनीकों को अभिगृहीत करने का आह्वहन किया तथा महसूस किया कि बोडो बाल साहित्य का विकास एवं वृद्धि अभी तरुणावस्था में है तथा लेखकों को बच्चों के दृष्टिकोण से सोचते हुए सरल भाषा-शैली में समस्त बाल साहित्य लिखना चाहिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अरबिन्दो उज़ीर ने की। तीन विद्वानों—श्री खगेन गोवारी, श्री प्रोमतेश बसुमतारी तथा श्री शांतिराम बसुमतारी ने विगत शताब्दियों में बोडो नाटक क्रमिक विकास पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री ललित च. बसुमतारी ने की। यह सत्र बोडो बाल साहित्य पर आधारित था। तीन विद्वानों—श्री बिस्तु दैमारी, श्री निर्मल बसुमतारी तथा श्री ऋतुराज बसुमतारी ने अपने आलेखों में बोडो बाल साहित्य के क्रमिक विकास पर विभिन्न दृष्टिकोणों यथा ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक तथा शैलीगत परिप्रेक्ष्य पर आधारित अपने विचार व्यक्त किए। श्री ललित च. बसुमतारी ने प्रस्तुत आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री मदन च. सोरगियारी ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री निर्मल बसुमतारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'आनंदरंग पिल्लै' पर केंद्रित परिसंवाद

31 जुलाई 2014, पुदुचेरी

साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलांगोवन ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने उपस्थित श्रोताओं को आनंदरंग पिल्लै के महत्त्व, उनके कृतित्व की संबद्धता तथा, उनकी विरासत के बारे में संक्षेप में बताया तथा यह भी बताया कि क्यों साहित्य अकादेमी इस महान साहित्यकार के साहित्य को संरक्षित करके रखना चाहती है तथा इसे प्रोत्साहित भी कर रही है।

साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक श्री. के. नाचिमुथु ने सत्र की अध्यक्षता की तथा उन्होंने

आनंदरंग पिल्लै कृत डायरियों की प्रकृति के बारें में बताया कि किस प्रकार वह आम बोलचाल की शैली में लिखी गई हैं। उन्होंने श्रोताओं को आनंदरंग पिल्लै के साहित्य पर पड़े मलयाळम् भाषा के प्रभाव के बारे में बताया। श्री नाचिमुथु ने सुझाव दिया कि कई विश्वविद्यालयों को आनंदरंग पिल्लै की कृतियों के विभिन्न आयामों पर गहन शोध करवाना चाहिए।

श्री अरोकियानाथन ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने आनंदरंग पिल्लै के बहुमुखी व्यक्तित्व के बारे में चर्चा की। उन्होंने आनंदरंग पिल्लै के कुछ अनजान रोचक पहलुओं के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि यद्यपि कई विद्वान और संस्थाओं ने आनंदरंग पिल्लै पर शोध-कार्य प्रारंभ किए हैं, फिर श्री आनंदरंग पिल्लै के साहित्य में पाए जानेवाले सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिवेश के प्रति उनकी जागरूकता की दिशा में और अधिक कार्य किया जाना अभी शेष है।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य श्री आर. संबथ ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता टैगोर अटर्स कॉलेज, पुदुचेरी के प्रोफ़ेसर एवं प्रभारी प्रधानाचार्य श्री ई. एम. राजन ने की। उन्होंने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा अपने आरंभिक वक्तव्य में आनंदरंग पिल्लै की भाषा पर अपने विचार व्यक्त किए।

श्री सिलांबु ना. सेल्वरासु ने आनंदरंग कोवइ तथा आनंदरंग पिल्लै तमिष्, वह साहित्य जो तमिष् काव्य की उप-शैली के रूप में लिखा जाता है, पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री.एस. साथीनारायण ने आनंदरंग विजया संबु तथा आनंदरंग पिल्लै की कृतियों पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए। श्री अरंग मुरुगियान ने ‘वनाम वसपादुम’ 20वीं सदी का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र जानेमाने नृविज्ञानी श्री भक्तावचल भारती की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। श्री शंकर ने आनंदरंग पिल्लै कृत डायरियों में व्यापार संबंधी संदर्भों पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। श्री इज़हिल रमन ने आनंदरंग पिल्लै कृत डायरियों में सिद्धार से संबंधित अपना आलेख प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री सैम विजय ने की। इस सत्र में प्रख्यात उपन्यासकार एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री प्रपंचन ने बताया कि किस प्रकार से आनंदरंग पिल्लै की लेखन प्रकृति के प्रति वे आकृष्ट हुए तथा किस प्रकार से वह इस आकर्षण के चलते 2 मौलिक कृतियों—मानुदम वेल्लुम और वानम वसापादुम लिखने के लिए प्रेरित हुए। साहित्य अकादेमी की तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस परिसंवाद में कई पत्रकारों शिक्षाविदों, अनंसुधान कर्त्ताओं तथा साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया।

चमन नाहल जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद
2 अगस्त 2014, नई दिल्ली

चमनलाल नाहल पर आयोजित परिसंवाद में व्याख्यान देती हुई श्रीमती गीतांजलि चटर्जी साहित्य अकादेमी ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली के सहयोग से 2 अगस्त 2014 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में चमनलाल नाहल (1927-2013) की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

चमनलाल नाहल की छोटी सुपुत्री डॉ. अनिता नाहल, फ़ेलाशिप एडमिनिस्ट्रेटर, द स्मिथसोनियन नेशनल म्यूज़ियम ऑफ़ अफ़्रीकन अमेरिकिन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, वाशिंगटन डी.सी. ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने कहा कि चमनलाल नाहल अकादेमी के लिए बहुत बड़ा महत्त्व रखते हैं, न सिर्फ़ इसलिए कि वे अकादेमी के पुरस्कार विजेता थे, बल्कि एक लेखक के रूप में उन्होंने जो मूल्य स्थापित किए वे अनुकरणीय हैं। नेहरू मेमोरियल, नई दिल्ली की सुश्री दीपा भटनागर ने

परिसंवाद में बोलते हुए श्रीमती गीतांजलि चटर्जी

चमनलाल नाहल द्वारा पांडुलिपि संरक्षण कला में दिए गए योगदानों तथा पुस्तकालय को दिए गए उनके सहयोग की चर्चा की।

अगले सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री वेंकटेश्वर कॉलेज की प्रोफ़ेसर डॉ. रूपाली सरकार तथा दिल्ली विश्वविद्यालय की एस. बी. एस. कॉलेज की डॉ. सुमनबाला ने चमनलाल नाहल के एकांत जीवन तथा उनकी जीवनी पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए। इसी सत्र में इंटरनेशनल हायर एजुकेशन, सी.यू.जी. में सलाहकार तथा सी.एल. एसोसिएशन के महासचिव डॉ. चंद्रमोहन तथा बालसाहित्यकार सुश्री दीपा अग्रवाल ने चमनलाल नाहल द्वारा भारतीय बालसाहित्य को दिए गए योगदान पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता रामलाल आनंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. विजय शर्मा ने की। जे.एन.यू. के पूर्व प्रोफ़ेसर प्रो. हरीश नारंग तथा डॉ. रूपाली सरकार गौड़ ने आज़ादी के विभिन्न पहलुओं, नाहल कृत उनकी श्रेष्ठ कृति तथा जिस कृति के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय कि पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष प्रो. आर.डब्ल्यू. देसाई ने की। यह सत्र नाहल कृत कहानियों पर आधारित था। इस सत्र में वेंकटेश्वर कॉलेज, नई दिल्ली के छात्रों ने सुश्री तूलिका नियोगी के निर्देशन में अपनी मंचीय प्रस्तुति की।

डॉ. विजय शर्मा ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. चमन नाहल की जयेष्ठ सुपुत्री डॉ. अजंता कोहली ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने समस्त प्रतिभागियों तथा साहित्य अकादेमी एवं इंडिया इंटरनेशनल सेंटर का इस परिसंवाद के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया।

छंद के स्वर : कविता उत्सव

6 अगस्त 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा लीला (LILA) फ़ाउंडेशन फ़ॉर ट्रांस-सोशल इनिसिएटिव्स के संयुक्त तत्त्वावधान में 6 अगस्त 2014 को 'छंद के स्वर' शीर्षक बहुभाषी कविता उत्सव का आयोजन अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में किया गया।

समारोह के प्रारंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के स्वागत भाषण तथा लीला फ़ाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक रिज़िओ योहान्नन राज के आरंभिक वक्तव्य के बाद प्रख्यात मलयाळम् कवि, पत्रकार और कठपुतली-प्रस्तोता एड्डिन खू ने उद्घाटन भाषण किया। उन्होंने बताया कि कैसे कविता हमेशा साक्ष्यों का वहन करती है तथा साथ ही नई उद्भावनाओं को भी स्वर देती है, भले ही वह राजनीतिक अथवा आलोचनात्मक ही क्यों न हो।

कविता-पाठ और विमर्श का प्रथम सत्र प्रख्यात मलयाळम् कवि-आलोचक प्रो. के. सच्चिदानंदन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में सुदीप सेन, अनामिका, वनीता, मिखायल क्रीएघटन और रिज़िओ योहान्नन राज ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

हिंदी लेखक इंद्रनाथ मदान पर परिसंवाद एवं पुस्तक लोकार्पण

8 अगस्त 2014, नई दिल्ली

प्रख्यात हिंदी समालोचक इंद्रनाथ मदान पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'विनिबंध' का लोकार्पण और उन पर एक परिसंवाद का आयोजन 8 अगस्त 2014 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

परिसंवाद कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक रमेश कुंतल मेघ ने की और फूलचंद मानव, राकेश कुमार और शैलेंद्र शैल ने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

अकादेमी द्वारा प्रकाशित विनिबंध के लेखक राकेश कुमार ने डॉ. मदान के आलोचकीय व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कहा कि उन्होंने आलोचना को व्यक्ति केंद्रित न होकर कृति-केंद्रित करने की वकालत की जो हिंदी आलोचना को ठीक राह पर लाने का महत्त्वपूर्ण प्रयास था।

फूलचंद मानव और शैलेंद्र शैल ने मदान जी के साथ बिताए अपने समय को याद करते हुए कहा कि उनकी लेखनी में जो बेबाकी थी वह उनके निजी जीवन में भी देखी जा सकती थी। वह अपने आप में अकेले एक 'संस्था' थे। वे आजीवन एक योद्धा की तरह अपने समय की चुनौतियों से अकेले ही जूझते रहे।

अपने अध्यक्षीय भाषण में रमेश कुंतल मेघ ने उनको एक आदर्श अध्यापक, उच्चकोटि का निबंधकार, आलोचक और संपादक के रूप में याद करते हुए उन्हें सुलझा और ज़िंदादिल इंसान बताया। आगे उन्होंने कहा कि उनके व्यक्तित्व के प्रभाव के चलते ही एक दौर में पंजाब हिंदी की साहित्यिक गतिविधियों के बड़े केंद्र के रूप में उभरा था। कार्यक्रम का संचालन उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

'साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेज़बरुआ : आधुनिक भारतीय साहित्य के एक अगुआ' पर संगोष्ठी

17-18 अगस्त 2014, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता ने असम साहित्य सभा के सहयोग से 17-18 अगस्त 2014 को अपने कार्यालय के सभागार में "साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेज़बरुआ : आधुनिक भारतीय साहित्य के अगुआ" विषयक एक संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए बेज़बरुआ की भाषाई सरलता एवं सरसता तथा बहुमुखी व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। साहित्य अकादेमी के असमिया भाषा परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने बेज़बरुआ

बाएँ से दाएँ : प्रो. करबी डेका हज़ारिका, श्री रणजीत कुमार देव गोस्वामी, श्री परमानंद राजबंशी तथा डॉ. के. श्रीनिवासराव

के लेखन पर पड़े प्रभावों की चर्चा की तथा उन्हें असमिया स्वच्छंदतावाद का जनक बताया। प्रो. रणजीत कुमार देव गोस्वामी ने अपने बीज भाषण में बंगाल के पुनर्जागरण में बेज़बरुआ के योगदानों की चर्चा की। असम साहित्य सभा के डॉ. परमानंद राजबंशी ने अकादेमी द्वारा इस संगोष्ठी के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. रणजीत कुमार देव गोस्वामी ने की। श्रीमती विभाग भराली, श्री चंदन समर्थ, श्री गौतम प्रसाद बरुआ, श्रीमती कल्पना तालुकदार तथा डॉ. परमनांद राजबंशी ने "बेज़बरुआ और समकालीन असमिया गद्य", "बेज़बरुआ और प्रथम असमिया फ़ीचर फ़िल्म जयमती", "बेज़बरुआ और समकालीन असमिया नाटक", "बेज़बरुआ और समकालीन असमिया गीत" तथा "बेज़बरुआ और उनकी कहानियों के विशेष संदर्भ में सर्जनात्मक समकालीन असमिया गद्य" विषयों पर आधारित क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए।

साहित्य अकादेमी की बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने समापन व्याख्यान दिया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया विद्वान श्री कुल सइकिया ने की। दोनों विद्वानों ने बेज़बरुआ के कार्यों की विविध दृष्टिकोणों से चर्चा की। साहित्य अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कश्मीरी साहित्य में मोहिउद्दीन हाजिनी का योगदान' विषयक परिसंवाद

18 अगस्त 2014, बांदिपोरा

साहित्य अकादेमी ने 'मोहिउद्दीन हाजिनी का कश्मीरी भाषा और साहित्य को योगदान' पर 18 अगस्त 2014 को बांदिपोरा में एक परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद की अध्यक्षता एवं संचालन प्रख्यात कश्मीरी लेखक मोहम्मद अहसन अहसन ने की तथा उन्होंने

परिसंवाद में भाग लेते हुए प्रतिभागी

कश्मीरी साहित्य की प्रकृति एवं उसके अनूठेपन तथा हाजिनी द्वारा उसको दिए गए योगदान की चर्चा की। उन्होंने अंत में कहा कि "मोहिउद्दीन हाजिनी कश्मीरी भाषा और साहित्य में उत्कृष्टता का एक प्रतीक हैं तथा उनके द्वारा कश्मीरी साहित्य को दिया गया योगदान समालोचकों और भविष्य के लेखकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगा।"

साहित्य अकादेमी की कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा ने कहा कि हाजिनी का संबंध कश्मीरी साहित्य से कई दशकों से रहा है तथा उनके कार्यों की महानता को सदियों तक याद किया जाएगा।

इस परिसंवाद में मोहम्मद इस्माइल आशना, महफ़ूज़ा जान, मिशैल सुल्तानपुरी, ज़मीर अंसारी, शाहबाज़ हक़बारी तथा मोहम्मद शफ़ी शाक़िर ने हाजिनी के जीवन तथा उनके योगदानों के विभिन्न पहलुओं पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ सदफ़ ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'राष्ट्रभाषा : स्वरूप, चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषयक संगोष्ठी

19 अगस्त 2014, नई दिल्ली

राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरूप, उसके समक्ष आ रही चुनौतियों और उसके भविष्य की संभावनाओं पर विचार करने के लिए एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 19 अगस्त 2014 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में उद्घाटन व्याख्यान देते हुए महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति डॉ. प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि हिंदी का लगातार विकास तो हो रहा है लेकिन राष्ट्रभाषा के रूप में अभी उसे उचित सम्मान नहीं मिला है। ऐसा केवल सरकारी नीतियों की वजह से ही नहीं हमारी अपनी व्यक्तिगत शिथिलता के कारण भी हो रहा है। हमें हिंदी को तकनीकी ज्ञान के रूप में अंग्रेज़ी के समकक्ष बनाना होगा।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध पत्रकार और माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का दायित्व है कि वह अन्य भारतीय भाषाओं को भी अपने साथ लेकर चले। हिंदी का अंग्रेज़ी या किसी अन्य भारतीय भाषाओं से न कोई विरोध है न प्रतिस्पर्धा, जो लोग भी ऐसा माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं वे न केवल हिंदी वरन् अन्य भारतीय भाषाओं को भी नुक़सान पहुँचा रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि डॉ. महेश चंद्र गुप्त ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को 8वीं अनुसूची में शामिल कराने की दौड़ हिंदी के स्वरूप को बिगाड़ रही है और यह सब राजनीति से प्रेरित है। इससे क्षेत्रीय भाषाओं को कोई विशेष लाभ नहीं मिल रहा है।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में हिन्दी ने राष्ट्र को एक सूत्र में जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रभाषा का संबंध हमारी संस्कृति और अस्मिता से भी होता है। हमें विभिन्न भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद की प्रक्रिया को बढ़ाना होगा तथा यह बात भी सुनिश्चित करनी होगी कि अनुवाद सरल, सुबोध और सुगम्य हो।

संगोष्ठी में बोलते हुए प्रतिभागी

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और निदेशक, राजभाषा (संस्कृति मंत्रालय) श्री वी.पी. गौड़ ने आरंभिक व्याख्यान दिया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में प्रो. विमलेश कांति वर्मा की अध्यक्षता में डॉ. परमानंद पांचाल, प्रो. तंकमणि अम्मा, श्री नारायण कुमार, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित और श्री राहुल देव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि किसी भी राष्ट्रभाषा के लिए पाँच मुख्य बिंदु होते हैं और वे हैं–उसमें लोक भाषा की शब्दावली, जनसंपर्क की भाषा के रूप में उसकी सरलता, जनसंचार माध्यमों में उसकी पैठ तथा राजभाषा के रूप में उसकी स्वीकार्यता। हिंदी यहाँ केवल शिक्षा की भाषा और राजभाषा के रूप में कमतर ठहरती है और उसके सामने आज सबसे बड़ी यही चुनौती है।

प्रख्यात पत्रकार श्री राहुल देव ने कहा कि हिन्दी मनोरंजन की भाषा बनती जा रही है। उसके तेज़ी से हिंग्लिश बनते जाने की प्रक्रिया को रोकना ज़रूरी है। प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषाओं की अनिवार्यता को ख़त्म करने के निर्णय पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह निर्णय हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के लिए बेहद घातक है। उन्होंने कहा कि अगर हिंदी को एक संभावना के रूप में बनाए रखना है तो इसे युवा पीढ़ी में लोकप्रिय बनाना होगा।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में प्रो. विमलेश कांति वर्मा ने कहा कि हिंदी भाषा के लिए काम करना और उसका सम्मान करना देश की सेवा और सम्मान करना है। हिंदी के प्रति संकुचित नज़रिया रखकर हम देश को बहुत बड़ा नुक़सान पहुँचा रहे हैं। हिंदी का दायरा बहुत बड़ा है और हमें उसको समुचित स्थान देना होगा।

कार्यक्रम कर संचालन अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

'समकालीन असमिया साहित्य का लोकजीवन पर प्रभाव' विषयक परिसंवाद

29 अगस्त 2014, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता ने नाहरकातिया कॉलेज, डिब्रूगढ़ के सहयोग से 29 अगस्त 2014 को डिब्रूगढ़ में "समकालीन असमिया साहित्य का लोकजीवन पर प्रभाव" विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने संक्षेप में कई असमिया संस्कृतियों तथा साहित्य परंपराओं की चर्चा की। साहित्य अकादेमी के असमिया भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में इस क्षेत्र में अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया और परिसंवाद के विषय पर बोलते हुए लोकजीवन और साहित्य के मध्य संबंधों पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री हरेकृष्ण डेका ने अपने बीज-भाषण में बताया कि किस प्रकार साहित्य को लोकजीवन और परंपराओं से पृथक नहीं किया जा सकता, अपनी बात के समर्थन में कई उदाहरण भी प्रस्तुत किए। कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. कल्याण बरुआ ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

बीज भाषण देते हुए श्री हरेकृष्ण डेका

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्पणा कुँवर ने की। प्रो. प्रफुल्ल गोगोई, सुश्री पल्लवी डेका बुज़रबरुआ तथा श्री प्राणजित बोरा ने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. हितेश बरदलै ने की। डॉ. अरविंद राजखोवा, प्रो. अरिंदम बरकतकी तथा प्रो. मामोनी देवी ने कार्यक्रम से संबंधित विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रवीण चंद्र दास ने की। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि लोक भाषा एवं बोलियाँ पृथक् हैं। परिसंवाद के अंत में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के प्रो. सत्यकाम बर ठाकुर ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

भाषांतर अनुभव

30 अगस्त 2014, तिरुवनंतपुरम

साहित्य अकादेमी द्वारा "भाषांतर अनुभव" शीर्षक एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 30 अगस्त 2014 को तिरुवनंतपुरम में किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों, विद्वानों तथा लेखकों का स्वागत करते हुए कहा कि अनुवाद मात्र वाक्यविन्यास या शब्दार्थ विज्ञान न होकर एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति में रूपांतरण होता है। उन्होंने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं को बताया कि अनुवाद अकादेमी की एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है तथा यदि यह कार्यक्रम सफल रहता है तो अकादेमी भारत के अन्य क्षेत्रों में अन्य भाषाओं के साथ इसे दोहराएगी। प्रख्यात मलयाळम् कवि एवं भाषाविद श्री पुत्तुसेरी रामचंद्रन ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में अनुवाद की तकनीकों तथा सूक्ष्म भेदों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि समस्त काव्य का सार अनुवाद है तथा समस्त अनुवाद और कुछ नहीं बल्कि पुर्नसर्जन है। साहित्य अकादेमी की तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. नाचिमुथु ने विस्तार से अनुवाद के दौरान अनुवादकों को आनेवाली कठिनाइयों की विस्तार से चर्चा की। अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने सत्र की अध्यक्षता की। अपने व्याख्यान में उन्होंने इस प्रकार के परिसंवाद कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता जानेमाने द्विभाषी लेखक एवं अनुवाद श्री नील पद्मनाभन ने की। प्रख्यात कन्नड कवि एवं नाटककार प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने अपनी कन्नड कविताएँ प्रस्तुत कीं, तत्पश्चात् प्रख्यात मलयाळम् लेखक एवं अनुवाद प्रो. के. सच्चिदानंदन ने उन कविताओं का मलयाळम् अनुवाद, श्री इंद्रन द्वारा उन कविताओं का तमिळ अनुवाद तथा साहित्य अकादेमी के तेलुगु भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने तेलुगु अनुवाद प्रस्तुत किया। इस सत्र के दूसरे भाग में श्री आशा राजु ने अपनी तेलुगु कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा श्री

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए श्री पुत्तुसेरी रामचंद्रन

प्रभा वर्मा ने उन कविताओं का मलयाळम् अनुवाद, श्रीमती उमा महेश्वरी ने उन कविताओं का तमिऴ अनुवाद तथा साहित्य अकादेमी के कन्नड भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने कन्नड अनुवाद प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अकादेमी प्रो. एन. गोपी ने की। प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अपनी दो मलयाळम् कविताएँ प्रस्तुत की, जिनका श्रीमती उमा महेश्वरी ने तमिऴ, श्री आशा राजु ने तेलुगु तथा प्रो. अरविंद मालागट्टी ने कन्नड अनुवाद प्रस्तुत किया। सत्र के दूसरे भाग में श्रीमती उमा महेश्वरी ने अपनी तमिऴ कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिनका श्री प्रभा वर्मा ने मलयाळम् में, श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने कन्नड में तथा प्रो. गोपी ने तेलुगु भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने की। श्री इंद्रन ने अपनी तमिऴ कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिनका डॉ. सी.आर. प्रसाद ने मलयाळम् में, श्री आशा राजु ने तेलुगु में तथा प्रो.एच.एस. शिवप्रकाश ने कन्नड भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। सत्र के दूसरे भाग में प्रो. अरविन्द मालागट्टी ने अपनी कन्नड कविताएँ प्रस्तुत की, जिनका डॉ.सी.आर. प्रसाद ने मलयाळम् में, श्रीमती उमा महेश्वरी ने तमिऴ में तथा प्रो. एन. गोपी ने तेलुगु भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मलयाळम् कवयित्री एवं समाजिक कार्यकर्त्ता श्रीमती सुगाता कुमारी ने की। इस सत्र में प्रो.एन. गोपी ने अपनी तेलुगु कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिनका श्री इंद्रन ने तमिऴ ने तथा प्रो. एच.एस. शिवप्रसाद ने कन्नड भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। सत्र के दूसरे भाग में श्री प्रभा वर्मा ने अपनी मलयालम् कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिनका प्रो.एच. एस. शिवप्रकाश ने कन्नड में, श्रीमती उमा महेश्वरी ने तमिऴ में तथा श्री आशा राजु ने तेलुगु भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया।

'संताली साहित्य पर ओड़िशा के संताल आंदोलनों का प्रभाव' विषयक परिसंवाद

31 अगस्त 2014, बारिपदा

साहित्य अकादेमी द्वारा 31 अगस्त 2014 को बारिपदा, ओड़िशा में 'संताली साहित्य पर ओड़िशा के संताल आंदोलनों का प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्‌घाटन करते हुए प्रख्यात संताली लेखक श्री उदय नाथ माझी ने ओड़िशा में संताल समुदाय से जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख किया और कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। स्वतंत्रता के पश्चात् हुए गुंदुरिया आंदोलन को भी उन्होंने संदर्भित किया, जिसमें हजारों संताल मारे गए थे। परिसंवाद के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी द्वारा विशेषकर संताली भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया और कहा कि जन आंदोलनों का व्यापक प्रभाव लोक जीवन और संस्कृति पर पड़ता है। किसी भाषा का साहित्य भी उससे अछूता नहीं रहता।

इस अवसर पर चर्चित संताली लेखिका डॉ. दमयंती बेसरा ने बीज भाषण करते हुए कहा कि सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के लिए संताल समुदाय में पर्याप्त जागरूकता आई है। अपने अध्यक्षीय भाषण में अकादेमी के संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने ओड़िशा के विभिन्न संताल आंदोलनों को संदर्भित करते हुए अपने विचार रखे। सत्रांत में संताली परामर्श मंडल के सदस्य श्री दाशरथि सोरेन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र श्री मंगल चरण माझी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री कांद्र मुर्मू, श्री रत्नाकर मुर्मू और श्री जगन्नाथ मुर्मू ने अपने आलेखों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री गोविंद चंद्र माझी ने की। इस सत्र में श्री माधव हांसदा, श्री रामराय माझी और डॉ. नाकू हांसदा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्रीमती रायमणि मरांडी द्वारा की गई। परिसंवाद का समापन भाषण प्रख्यात संताली लेखक श्री अर्जुन चरण मरांडी द्वारा दिया गया। अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन श्री गंगाधर हांसदा ने किया।

कवि कंबदासन पर केंद्रित परिसंवाद

1 सितंबर 2014, कराइकल

साहित्य अकादेमी के उप क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई के कराईकल में 1 सितंबर, 2014 को कवि कंबदासन पर एक एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के प्रभारी ए.एस इलानगोवेन ने अपना स्वागत भाषण देते हुए कहा कि कवि कंबदासन के जीवन को यदि हम देखें तो वे जितनी काव्यात्मक कल्पना की उड़ान भरने में समृद्ध हैं उतना ही उनके जीवन का आर्थिक पक्ष भी समृद्ध है। कभी-कभी देखा जाता है कि कलाकार लोक जीवन के व्यावहारिक पक्ष की घनघोर अवहेलना कर देते हैं और परिणामस्वरूप अधिकांश कवि दरिद्रता के शिकार हो जाते हैं। जबकि उनकी काव्यात्मक उपलब्धियाँ काफ़ी ऊँची होती हैं। तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. नाचिमुथु ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि साहित्य अकादेमी बीसवीं शताब्दी के महान तमिळ कवियों कंबदासन, कु. सा. कृष्णमूर्ति और लेखक विंधन के तमिळ साहित्य के ज़रिए भारतीय साहित्य में दिए गए उनके असाधारण योगदान को रेखांकित करने का काम कर रही है। इसके लिए उन्होंने पांडिचेरी के साहित्यिक जगत का धन्यवाद व्यक्त किया।

इस अवसर पर तमिळ कविता के जाने-माने विद्वान सायाबू माराय कायर ने मुख्य भाषण दिया और उन्होंने कंबदासन की कुछ कविताओं और गीतों का मधुर गायन भी किया। कंबदासन की कविताओं पर बोलते हुए मारायकायर ने उल्लेख किया कि कंबदासन की काव्यात्मक प्रतिभा भारतीदासन के सान्निध्य में पुष्पित और पल्लवित हुई। कंबदासन ने क्रांतिकारी आदर्शों और जनसंघर्षों को आत्मसात करते हुए अपनी कविताओं में समाजवादी विचारों को प्रति गहरी रुचि दिखायी है। एक तरफ़ जहाँ कंबदासन की कविताओं की जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता, राममनोहर लोहिया जैसे समाजवादी नेताओं ने सराहना की है, वहीं दूसरी तरफ़ हिंदुस्तानी संगीतकार नौशाद, बाङ्ला लेखक हीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय और इक़बाल ने भी उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि महान कवि इक़बाल ने कंबदासन को अंग्रेज़ी अनुवाद के ज़रिए पढ़ते हुए उनके आदर्शों और विचारों की जमकर प्रशंसा की है। साहित्य अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य डॉ. संबथ ने कहा कि कंबदासन के कविता संग्रह मिल पाइकों के द्वारा काफ़ी सराहे गए हैं। उन्होंने कहा कि कंबदासन भारती और भारतीदासन की काव्य परंपरा को आगे बढ़ाते हैं। आयोजन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता अववायुर महिला महाविद्यालय, काराइकल के प्राचार्य डॉ. ना इलानकों ने की। उन्होंने कंबदासन की प्रकृति पर लिखी एक महान कविता का उल्लेख किया।

साहित्य अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य आर कामरासु ने कंबदासन द्वारा लिखी कहानियों पर एक विचारपरक भाषण दिया। उन्होंने कंबदासन के कहानी संग्रह 'कंबदासन कथैइगल' का ज़िक्र करते हुए कहा कि संग्रह की कहानियां दलितों-वंचितों और ग़रीबों की दशा का यथार्थवादी वर्णन बड़े ही सधे अंदाज में करती हैं। श्री विलियानुर ने कंबदासन के महाकाव्यों पर एक लेख पढ़ा और उनके महाकाव्य 'कानीकई' (भेंट) ओर 'रथ ओवियम' पर संक्षेप में प्रकाश डाला। श्रीमती अवाई निर्मला ने कंबदासन की मुख्य रूप से कविताओं और गीतों का समाज पर पड़नेवाले प्रभावों का उल्लेख किया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता तिरुमेहनी नागररासन ने की।

श्री भारती वसंतन ने कंबदासन की फ़िल्मों पर लिखे गीतों पर विस्तार से बातचीत की। उन्होंने कंबदासन के प्रेम गीत के सहज सौंदर्य की ओर इशारा किया। इलाई शिवकुमार ने समापन भाषण देते हुए कंबदासन द्वारा लिखे निबंधों और आलेखों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उठयासुरियन ने समापन वक्तव्य देते हुए कंबदासन द्वारा रचित नाटकों, महाकाव्यों, कहानियों, उपन्यासों की सराहना की और उनके महान योगदान को याद किया।

इस अवसर पर तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य सुंद्रा मुरुगन ने वर्तमान में लिखे जा रहे तमिऴ गीतों और कंबदासन द्वारा लिखे गीतों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

भवानी प्रसाद मिश्र जन्मशती संगोष्ठी

5-6 सितंबर 2014, इंदौर

साहित्य अकादेमी द्वारा मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर के साथ भवानी प्रसाद मिश्र पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन, 5-6 सितंबर 2014 को इंदौर में किया गया।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध आलोचक प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा कि भवानी भाई की कविताएँ उनके समय के आंतरिक संघर्षों को प्रतिबिंबित करती हैं। बीज वक्तव्य देते हुए अवधेश प्रधान ने कवि की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य संसार के अंदरूनी पक्षों तथा उनकी विचारधारा और उनके युग के प्रभावों को रेखांकित किया। इससे पहले मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति के प्रधानमंत्री सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी ने अपने आरंभिक वक्तव्य में भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में गाँधी के विचारों का उल्लेख किया तथा उनके संस्मरण सुनाए।

दूसरे सत्र में उनकी स्मृति पर सरोज कुमार की अध्यक्षता में अमरेंद्र सिंह, कशमीर उप्पल, राकेश दीवान और दिलीप चिंचालकर ने अपने संस्मरण साझा किए। तीसरा सत्र 'भवानी प्रसाद की काव्य भाषा और सौंदर्य चेतना' पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता गोपेश्वर सिंह ने की और दिनेश कुशवाह, अरुणेश नीरन और सुरेश सलिल ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। अध्यक्ष गोपेश्वर सिंह ने कहा कि भवानी प्रसाद की कविता का मूल्यांकन हिंदी साहित्य में प्रचलित वादों की चारदीवारी के भीतर रहकर ही नहीं किया जा सकता। इसके लिए स्वतंत्र चेतना की ज़रूरत है।

दूसरे दिन संगोष्ठी का पहला सत्र 'भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में प्रकृति' विषय पर था, जिसकी अध्यक्षता बलदेव वंशी ने की और शैलेंद्र शर्मा, माधव हाड़ा, कृष्ण कुमार सिंह और लक्ष्मण केडिया ने अपने विचार रखे।

दूसरा सत्र 'भवानी प्रसाद मिश्र और गाँधी दर्शन' पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता देवेंद्र दीपक ने की और व्यासमणि त्रिपाठी, ध्रुव शुक्ल तथा प्रभु जोशी ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र में 'सप्तक परंपरा और भवानी प्रसाद मिश्र' विषय पर अजय तिवारी की अध्यक्षता में जितेंद्र श्रीवास्तव, निरंजन श्रोत्रिय, अरुण होता और सुधा उपाध्याय ने वक्तव्य दिए। सभी वक्ताओं ने माना कि सप्तक परंपरा में मौजूद सभी कवियों में भवानी प्रसाद मिश्र अन्यतम हैं।

संगोष्ठी के समापन सत्र में सत्यदेव त्रिपाठी ने प्रेक्षक के रूप में अपनी रिपोर्ट रखी। समापन वक्तव्य देते हुए प्रसिद्ध आलोचक विजय सिंह ने कवि की रचना प्रक्रिया, कवि के समकाल, उनके जीवन के विभिन्न पक्षों पर विस्तृत प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

'भारतीय भाषाओं में स्कूली शिक्षा' विषयक संगोष्ठी

6-7 सितंबर 2014 बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने कुवेंपू भाषा भारती प्राधिकरण के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय भाषाओं में स्कूली शिक्षा विषयक एक संगोष्ठी का आयोजन 6-7 सितंबर 2014 को नयना सभागार बेंगळूरु में किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने किया। इस अवसर पर श्री कंबार ने कहा कि उन्हें महसूस होता है कि तेज़ी से बदलते आधुनिक समाज में और विशेष रूप से शिक्षा की भाषा पर सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले के मद्देनज़र भाषाओं और बोलियों को नुक़सान से बचाने के लिए सरकार को तत्काल कोई क़दम उठाना चाहिए। कुवेंपू भाषा भारती प्राधिकरण के अध्यक्ष के.वी. नारायण ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि शिक्षा की मौजूदा प्रणाली को तत्काल सुधारने की ज़रूरत है, उन्होंने यह भी कहा कि आज भाषाओं की विविधता में एक भाषा प्रणाली में शिक्षा देना उचित नहीं है। देवी प्रसन्न पटनायक, गणेश एन. देवी, एन. गोपी, प्रो. नाचिमुत्थु ने उद्घाटन सत्र में अपने विचार रखे और भारतीय भाषाओं के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति अपनाने का सरकार से आह्वान किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता ओ. एल. नागभूषण ने की तथा अन्नामलाई, उषा देवी, एवं जोसफ़ कोइपल्ली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता भरत इनामदार ने की तथा जोगा सिंह, कांजी पटेल, चंद्रप्रकाश देवल, ओ. एन. कौल, एवं राजेश सचदेवा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता नटराज हुलियर ने की, तथा बलराम पांडे, प्रशांत नायक, वासुदेव मोही एवं के. सेतुरमन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथे सत्र में महाबलेश्वर राव, बी. मल्लिकार्जुन एवं मेती मल्लिकरुणा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता सी. नागन्ना ने की। कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक नरहल्ली बालसुब्रमण्यम ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा समापन वक्तव्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक सी. राधाकृष्णन ने दिया।

संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं पर केंद्रित परिसंवाद

7 सितंबर 2014, सुपौल

"महापुरुषों के जीवन और कृतित्व की यह ख़ासियत होती है कि वे एक ही साथ साधारण से साधारण व्यक्ति के लिए भी बोधगम्य और जीवनोपयोगी होते हैं, तो दूसरी ओर उच्च कोटि के बौद्धिकों के लिए विमर्श की वस्तु होते हैं। यह विशेषता हमें लक्ष्मीनाथ गोसाईं के जीवन और कृतित्व में मिलती है।

"गोसाईं जी का साहित्य विशुद्ध रूप से नवजागरण की देन है, जो उन्नसवीं सदी के भारत के लिए एक विलक्षण जीवन मूल्य था। उनके भजनों में अंग्रेज़ी राजसत्ता के प्रति तीव्र घृणा और विद्रोह की भावना व्यक्त हुई है।

"मिथिला के नवजागरण के प्रथम उदय के वे शलाका पुरुष हैं। धर्म, जाति, पंथ आदि तमाम चीज़ों से ऊपर जाकर उन्होंने न केवल अपनी भक्ति-रचनाएँ लिखीं, अपितु दूर दराज़ के इलाक़ों में घूम-घूमकर विधेय जीवनमूल्यों को प्रचारित प्रसारित किया।

"मैं इस बात की संभावना देख रहा हूँ कि जैसे स्वामी दयानंद अवध के गाँवों में भूमिगत रहकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध 1857 के विद्रोह में आए। वरना, राम की कोई विशेष प्रतिष्ठा मिथिला में नहीं थी। मिथिला ने परंपरागत रूप से राम को कभी अच्छा नहीं माना, क्योंकि उन्होंने मिथिला की बेटी सीता को सताया।"

उपर्युक्त बातें साहित्य अकादेमी नई दिल्ली एवं गोस्वामी लक्ष्मीनाथ संगीत महाविद्यालय, परसरमा, सुपौल के संयुक्त तत्त्वावधान में रविवार 7 सितंबर को आयोजित

संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं पर केंद्रित परिसंवाद तथा कवि सम्मेलन कार्यक्रम में साहित्यकार तारानंद वियोगी ने की।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत करते हुए देवेंद्र कुमार देवेश (विशेष कार्याधिकारी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली) ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास के बाद लक्ष्मीनाथ गोसाईं एकमात्र समन्वयवादी कवि हुए, जिन्होंने निर्गुण और सगुण का समन्वय किया। लक्ष्मीनाथ गोसाईं के साहित्य से हम काफ़ी ऊर्जा और प्रेरणा पा सकते हैं। कार्यक्रम का उद्‌घाटन तिलक नाथ मिश्र एवं साहित्य अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका वीणा ठाकुर ने दीप प्रज्वलित कर किया एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता मैथिली साहित्य अकादेमी, बिहार के निवर्तमान अध्यक्ष कमलाकांत झा ने की। इस उद्‌घाटन सत्र में बीज भाषणकर्ता धीरेंद्र नाथ झा धीर एवं मुख्य अतिथि परमेश्वर झा थे। इस अवसर पर वीणा ठाकुर ने कहा कि साहित्य संस्कृति का परिचायक होता है। इसलिए साहित्य के विकास बिना देश का विकास नहीं हो सकता। इस साहित्यिक आयोजन में हम मुख्य रूप से भारतीय साहित्य में लक्ष्मीनाथ गोसाईं के योगदान पर विमर्श करेंगे। लक्ष्मीनाथ गोसाईं के साहित्यिक योगदान का भारतीय दर्शन में क्या महत्त्व है हमें इसे समझना होगा।

एक दिवसीय इस कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने परिसंवाद को आगे बढ़ाते हुए रामनरेश सिंह ने '1857 ई. की क्रांति और लक्ष्मीनाथ गोसाईं', कुलानंद झा ने 'लक्ष्मी नाथ गोस्वामी के कृष्ण संबंधी पद की विशेषता', अभयकांत ठाकुर ने 'परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं के जीवन योग साधना', सुनीता झा ने 'परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं की आध्यात्मिक चेतना एवं सामाजिक व्यवस्था', विषयक आलेख पाठ किया। रामचैतन्न्य धीरज ने संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं रचित प्राती में आध्यात्मिक दर्शन पर बोलेते हुए कहा कि आज विज्ञान ने भी भारतीय अध्यात्म चिंतन—मुख्यतः वेदांत को प्रमाणित कर नया संदेश दिया है कि वेदांत का प्रमाण अकाट्य है। गोस्वामी लक्ष्मीनाथ जी ने वेदांत की परंपरा में ही चिंतन एवं योग का प्रयोग किया। इनके आध्यात्मिक चिंतन में मुख्यतः प्राती में योग दर्शन का प्रयोग अद्वितीय है।

अरविंद ठाकुर ने संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं के व्यावहारिक गीत में निर्गुण भाव पर आलेख पाठ करते हुए कहा कि लक्ष्मीनाथ गोसाईं को किसी वाद किसी धारा किसी पंथ से जोड़े बिना उन्हें एक भक्त कवि ओर उनकी रचनाओं को शुद्ध भजन-कीर्तन मानकर ही उनका सटीक साहित्यिक विश्लेषण मूल्यांकन किया जा सकता है। अरविंद ठाकुर ने लक्ष्मीनाथ गोसाईं जी को कर्मकांडी-कबीरपंथी की संज्ञा दी। उनकी लेखनी में सिद्धपंथियों, नाथपंथियों ओर सगुण-निर्गुण की विभिन्न धाराओं का प्रभाव रहा है। उन्होंने साहित्यकार हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' को संदर्भित करते हुए कहा कि गोस्वामी जी बाग्कार कवि थे जो स्वयं गीतों की रचना करते, उन्हें राग-रागिनियों में बाँधते तथा अपनी कीर्तन मंडली द्वारा उसे गवाते। यह उनका अद्‌भुत लोक संपर्क कार्य था। इस प्रकार वे अपने समय के महान जनकवि थे।

परिसंवाद का समापन भाषण श्री खुशीलाल झा द्वारा किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री बुचरू पासवान ने की। औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

'स्वातंत्र्योत्तर मराठी आलोचना' पर परिसंवाद

9 सितंबर 2014, नांदेड

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के सहयोग से नांदेड में स्वातंत्र्योत्तर मराठी आलोचना पर 9 सितंबर 2014 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्‌घाटन लब्धप्रतिष्ठ मराठी लेखक एवं आलोचक गंगाधर पटवने ने किया।

क्षेत्रीय सचिव कृष्ण किंबहुने ने स्वागत वक्तव्य में अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मराठी की नई आलोचना को मूलतः दो भागों में विभाजित किया जा

सकता है—एक 1947 से 1960 तक दूसरा 1960 से आज तक। गंगाधर पटवने ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि हमारी आलोचना कुछ मूल्यों से बँधी हुई थी और इसका प्रभाव 1950 तक देखा जा सकता है। इस अवधि में डी. के. बेडेकर, एस.के. क्षीर सागर, डी.वी. कुलकर्णी जैसे आलोचकों के नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि मराठी आलोचना 1960 के बाद धीरे-धीरे परिवर्तित होती गई और आज यह पूरी तरह से परिवर्तित हो गई है। उन्होंने आगे कहा कि आज की मराठी आलोचना पूर्णरूप से पाश्चात्य आलोचना पर निर्भर है। प्रसिद्ध मराठी आलोचक दिगंबर पाध्ये ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि आलोचना पुस्तक समीक्षा से आरंभ होकर आलोचना सिद्धांत तक पहुँची है और बुनियादी रूप से दो प्रकार की रही है, व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक। उन्होंने आगे कहा कि पहले आलोचना को श्रेणीबद्ध करना संभव था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के कुलपति पंडित विद्यासागर, इस परिसंवाद के मुख्य अतिथि थे। रमेश ढागे, निदेशक, भाषा एवं साहित्य विभाग एस. आर. टी. एफ. विश्वविद्यालय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता एल.एस. देशपांडे ने की तथा आशुतोष पाटिल, अविनाश सप्रे एवं सुश्री अरुणा दुभाषी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाटिल ने कहा कि 1947 से 1960 के मध्य मराठी कविता की आलोचना कलात्मकता एवं यथार्थवाद के मध्य डोलती नज़र आती है एवं कोई सैद्धांतिक आलोचना नहीं थी। इस अवधि में मर्ढेकर, करंदीकर, ब.ल. कुलकर्णी, दिलीप चित्रे एवं कुसमावती देशपांडे के नाम आलोचना के क्षेत्र में प्रमुखता से लिए जा सकते हैं। सुश्री अरुणा दुभाषी ने 1947 से 1960 के मध्य मराठी उपन्यासों की आलोचना पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता टी.एस. कुलकर्णी ने की। नीलकंठ कदम, सतीश बर्वे एवं रामचंद्र कालुंखे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीनों वक्ताओं ने सुधीर रसाल, भालचंद्र नेमाड़े, दिलीप चित्रे, विलास सारंग, सुधा जोशी एवं एम.डी. हतकांगलेकर को 1961 से वर्तमान तक का अहम आलोचक बताया।

अंतिम सत्र काव्य गोष्ठी के लिए था। नीलकंठ कदम, श्रीधर नांदेकर, केशव देशमुख, पी. विठ्ठल एवं पृथ्वीराज तौर ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत की। मराठी परामर्श मंडल की सदस्य कौटिकराव थाले पाटील ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'भारतीय साहित्य में महिला लेखन : कल, आज और कल' विषयक संगोष्ठी

13-14 सितंबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी एवं प्रजास्वामिक रचयित्रुला वेदिका एवं दिल्ली तेलुगु साहिती के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय साहित्य में महिला लेखन : कल, आज और कल' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 13-14 सितंबर 2014 को आंध्रा एसोसिएशन बिल्डिंग, नई दिल्ली में किया गया।

उद्घाटन सत्र में आंध्रा एसोसिएशन के के. सत्यनारायण ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए आंध्रा एसोसिएशन की गतिविधियों से अवगत कराया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में आर.मणि नायडू ने कहा कि महिला लेखन को न केवल बड़ी भाषाओं, बल्कि छोटी भाषाओं में प्रोत्साहित करना चाहिए। मुख्य अतिथि कंभमपति राममोहन राव ने बीसवीं शताब्दी के महिला लेखन को इंगित करते हुए 21वीं शताब्दी के महिला लेखन की महत्ता को बताया।

अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कात्यायनी विद्महे ने संगोष्ठी के विषय एवं अवधारणा के बारे में बताया। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की सदस्य सी. मृणालिनी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र सामाजिक परिवर्तन एवं महिला लेखन को समर्पित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी

पुरस्कार से सम्मानित मलयाळम् कवि के. सच्चिदानंदन ने की। सत्र में पाँच विभिन्न भाषाओं के पाँच आलेख सुश्री अंतरा देव सेन, मृदुला गर्ग, उर्मिला पवार एवं सुश्री ओलगा द्वारा प्रस्तुत किए गए।

द्वितीय सत्र का विषय था 'क्लासिकी साहित्य में महिला लेखन' एवं सत्र की अध्यक्षता के.एन. मल्लेश्वरी ने की। ई.एम. राव, सुश्री एम.वी. लक्ष्मी, सुश्री एम.कृष्णा कोलिपका शोभा रानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र आधुनिक तेलुगु साहित्य में महिला लेखन विषय पर था तथा सत्र की अध्यक्षता सुश्री अणिशेट्टी रजिता ने की। इस सत्र में के.वी. राम लक्ष्मी, सुश्री एम. श्यामला एवं सुश्री शांति प्रबोध ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र 'महिला लेखन 1960-2000' विषय पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता सुश्री पी. राज्यलक्ष्मी ने की। सुश्री नानदेपुदी निर्मला, सुश्री वीर लक्ष्मी देवी, सुश्री नल्लोरी रुक्मणी, सुश्री एन. रत्नमाला एवं सुश्री मर्सी मारग्रेट ने विभिन्न विधाओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र समकालीन तेलुगु महिला लेखन पर आधारित था और सत्र की अध्यक्षता जे. भाग्यलक्ष्मी ने की। इस सत्र में सुश्री कुपीली पद्मा, सुश्री विजयभानु कोट्टे, पुटला हेमलता एवं सुश्री एम. विमल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता के.जी. राव ने की।

भानुभक्त आचार्य जन्मद्विशतवार्षिकी संगोष्ठी

13-14 सितंबर 2014, दार्जीलिङ

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं गोरखा दुख निवारक सम्मेलन के संयुक्त तत्त्वावधान में भानुभक्त आचार्य की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 13-14 सितंबर 2014 को दार्जीलिङ में किया गया। भानुभक्त आचार्य नेपाली भाषा के आदि कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिनकी नेपाली रामायण हरेक नेपाली परिवार में आदरेय है।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने वक्ताओं एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला और बताया कि अकादेमी नेपाली साहित्य के विकास के लिए कार्य करती है। गोरखा दुख निवारक सम्मेलन के अध्यक्ष बी.बी. गुरुंग ने सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रधान ने आरंभिक वक्तव्य दिया। नेपाली साहित्य अध्ययन समिति के अध्यक्ष मनबहादुर प्रधान ने उद्घाटन वक्तव्य दिया एवं सुप्रसिद्ध नेपाली कवि-आलोचक जीवन नामडुंग ने बीज वक्तव्य दिया। गोरखा दुख निवारक सम्मेलन के महासचिव बी.के. राय ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। तीन अकादेमिक सत्रों की अध्यक्षता सर्वश्री नंद हाङ्खिम, नरबहादुर राई एवं कृष्णराज घतानी ने की। सुश्री राधा शर्मा, सुश्री बीना हाङ्खिम, गंगा प्रसाद भट्टराई, कर्ण थामी, गोकुल सिन्हा, नवीन पौड्याल, श्रीमती शांति क्षेत्री एवं श्रीमती सुजातारानी राई ने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत किए गए आलेखों पर उपस्थित श्रोताओं ने भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की तथा आलेखों से संबधित कुछ प्रश्न भी उठाए, जिनके संबधित आलेख वाचकों ने सहजता एवं सुगमता से उत्तर दिए। समापन सत्र की अध्यक्षता केदार गुरुंग ने की एवं समापन वक्तव्य प्रताप चंद्र प्रधान, अधिष्ठाता, सिक्किम विश्वविद्यालय ने दिया। कार्यक्रम में शहर के गणमान्य, लेखक कवि एवं साहित्य रसिक भारी संख्या में उपस्थित थे।

प्रणवबंधु कर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

13 सितंबर 2014, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा उत्कल विश्वविद्यालय के ओड़िया विभाग के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ ओड़िया कथाकार प्रणवबंधु कर की जन्मशतवार्षिकी पर एक

संगोष्ठी का आयोजन 13 सितंबर 2014 को भुवनेश्वर में किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया तथा प्रणवबंधु कर के लेखन का दूसरे विधाओं पर प्रभाव को रेखांकित किया। अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारतीय साहित्य के परिदृश्य में प्रणवबंधु कर का स्थान बहुत ऊँचा बताया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि उत्कल विश्वविद्यालय के कुलपति अशोक कुमार दास ने साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रणवबंधु कर का उनके जीवन पर बड़ा प्रभाव है। विश्वविख्यात आलोचक एवं नाटककार नारायण साहु ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि कैसे प्रणवबंधु कर ने मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववाद के सम्मिश्रण को एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में प्रयोग करते हुए सामाजिक वास्तविकता को चित्रित किया। साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक ने ओड़िया कथाकारों के बाद की पीढ़ी पर प्रणवबंधु कर के प्रभावों के बारे में बात की। क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के प्रभारी गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा इस अवसर पर प्रणवबंधु कर के अप्रकाशित एकांकी *चिह्नामाटी अचिह्ना आकाश* का लोकार्पण किया गया।

प्रथम सत्र प्रणवबंधु कर के कथा साहित्य को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता वैष्णव चरण सामल ने की तथा पाँच विद्वानों खिरोद बेहरा, प्रकाश परिदा, संतोष कुमार त्रिपाठी, उदयनाथ साहु एवं संघमित्र मिश्र ने प्रणवबंधु कर की कहानियों में सामाजिक वास्तविकताओं के चित्रण पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरा सत्र प्रणवबंधु कर के नाटकों पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता हेमंत कुमार दसंद ने की। विष्णुप्रिया ओटा, नारायण सेठी, राजलक्ष्मी जेना एवं समर मुदाली ने प्रणवबंधु कर के नाट्य लेखन, कला एवं शैली पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता नीलाद्रि भूषण हरिचंदन ने की। प्रतिष्ठित ओड़िया रंगकर्मी अनंत महापात्र इस सत्र के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने प्रणवबंधु के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक घटनाओं के बारे में बताया। प्रणवबंधु कर के पुत्र श्रीमय कर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कु.सा. कृष्णमूर्ति जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

14 सितंबर 2014, पुडुकोट्टि

दिनांक 14 सितंबर, 2014 को साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई के पुडूकोट्टि में उल्लेखनीय कवि एवं गीतकार कु.सा. कृष्णमूर्ति को उनके जन्म शताब्दी वर्ष पर याद किया गया।

उद्घाटन सत्र में चेन्नई कार्यालय प्रभारी अधिकारी श्री ए.एस. इलांगोवन ने कु.सा. कृष्णमूर्ति के जीवन और उनकी विरासत पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम में आए सभी प्रतिभागियों, दर्शकों-श्रोताओं और विद्वानों का स्वागत किया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. नाचिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कृष्णमूर्ति के सिनेमा, नाटक, कविता, इतिहास, आलोचना और पत्रकारिता के क्षेत्र में दिए गए योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे इस जन्मशताब्दी वर्ष का हिस्सा होने पर गर्व का अनुभव करते हुए कहा कि अकादेमी को तमिऴ साहित्य के तमाम साहित्यिक विभूतियों का जन्म शताब्दी वर्ष मनाना चाहिए। सिलांबोली सेल्लप्पन ने अपना मुख्य भाषण देते हुए कहा कि कृष्णमूर्ति बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कृष्णमूर्ति के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न होने के बावजूद उनकी संपूर्ण

बाएँ से दाएँ : सर्वश्री के. नाचिमुथु, सिलांबोली सेल्लप्पन तथा सी. सेतुपति

प्रतिभा तमिऴ साहित्य को नहीं मिल सकी। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सी. सेतुपति ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री विजया त्रिवेंगदम ने की, जिसके अंतर्गत श्री पी. वेंकटरमण, श्री तमारै कन्नन और श्री एम. पलानी अप्पन जैसे विद्वानों ने कवि कृष्णमूर्ति के जीवन और कृतित्व के विभिन्न आयामों का मूल्यांकन करते हुए आलेख प्रस्तुत किया। श्री वेंकटरमण ने कु.सा. कृष्णमूर्ति को बचपन से ही तेजस्वी और मेधावी बताया और किस तरह से उनकी तेजस्विता ने उनको एक महान् कवि बनाया, इसका उल्लेख भी किया। श्री तमारै कन्नन ने कृष्णमूर्ति के तमिऴ साहित्य में दिए गए महत्त्वपूर्ण योगदान को याद किया और उनके 'तमिऴ नाटक वारालारू' के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अंतिम वक्ता के तौर पर श्री पलानी अप्पन ने कृष्णमूर्ति की चुनी हुई कविताओं का पाठ किया और उन कविताओं पर एक आलोचनात्मक वक्तव्य भी पेश किया। श्री एस. रामानुजम ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें सर्वश्री रवि सुब्रमणियन, के. प्रतिभा राजा और आर. कुरुंजी वेंदन ने कृष्णमूर्ति के सिनेमा और संगीत के क्षेत्र में दिए गए महत्त्वपूर्ण योगदान पर बहुआयामी दृष्टिकोण से प्रकाश डाला। श्री रवि सुब्रमणियन ने 'पेरुवमषै' और 'ईसाई इनबाम' का संदर्भ देते हुए कहा कि कृष्णमूर्ति की प्रतिभा दुर्लभ थी, जिन्होंने इन दोनों फ़िल्मों के लिए न सिर्फ़ गीत लिखे, उनको संगीतबद्ध भी किया, बल्कि खुद उनको गाया भी। सुब्रमण्यन ने तमिऴ फ़िल्म 'रथ कनीर' के गीत 'कुत राम पुरिंधवन' का उदाहरण दिया, जिससे कृष्णमूति की बहुमुखी प्रतिभा का परिचय मिलता है। श्री के. प्रतिभा राजा ने कृष्णमूर्ति द्वारा लिखे और मंचित उन नाटकों का मूल्यांकन किया, जिन्होंने बाद में कृष्णमूर्ति को फ़िल्मों के संवाद और पटकथा लिखने में मदद की। श्री आर. कुरूंजी वेंदन ने कृष्णमूर्ति के विश्व सिनेमा में दिए योगदान पर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। श्री थंगम मूर्ति ने समापन सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें तीन उदीयमान कवियों—सर्वश्री सिंगामुथु, सेंवई मानवलन और सुश्री स्वाति ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया।

श्रद्धाकार सुपकार जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

14 सितंबर 2014, संबलपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने विख्यात ओड़िया लेखक श्रद्धाकार सुपकार की जन्मशती के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 14 सितंबर को संबलपुर में किया।

कोलकाता कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। प्रख्यात लेखक एवं कवि हरा प्रसाद दास ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए श्रद्धाकार सुपकार के लेखन शैली के बारे में बात करते हुए कहा कि सुपकार का व्यक्तित्व उनके लेखन में झलकता है। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य गोपाल कृष्ण रथ ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रद्धाकार के जुनून और व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। कॉलेज की प्राचार्य सुमिता देवी ने श्रद्धाकार के प्रति श्रद्धांजलि अभिव्यक्त की। नाकू हांसदा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य कृष्णचंद्र प्रधान ने की तथा गौरीदास प्रधान, लक्ष्मीनारायण पाणिग्रही, श्याम भोइ एवं गणेशराम नायक ने क्रमशः श्रद्धाकार का नेतृत्व विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में भगवत प्रसाद नंदा, द्वारिका नाथ नायक तथा प्रदीप कुमार पंडा ने क्रमशः श्रद्धाकार सुपकार के नाटक, कथा एवं राजनीतिक सक्रियता विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र की अध्यक्षता कुमुद रंजन पाणिग्रही ने की। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए करुणाकार सुपकार ने समापन वक्तव्य दिया तथा गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'कन्नड साहित्य में नई पीढ़ी' विषयक परिसंवाद

20 सितंबर 2014, मंगलौर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा बसंत महिला कॉलेज, मंगलौर के सहयोग से 'कन्नड साहित्य में नई पीढ़ी' विषयक परिसंवाद का आयोजन मंगलौर में 20 सितंबर 2014 को किया गया।

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के कार्यक्रम अधिकारी के.पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

लब्धप्रतिष्ठ कन्नड विद्वान डॉ. बी. ए. विवेक राय ने परिसंवाद का उद्‌घाटन किया एवं साहित्य में तकनीक की भूमिका तथा साहित्य के रूपों का ज़िक्र करते हुए ब्लॉग लेखन की चर्चा की।

डॉ. राय ने कई विचारों, विचारों के विस्फोट एवं विचारों के मिश्रण के बारे में बात की तथा उनमें प्रत्येक के साथ व्यवहार करने के उदाहरण दिए। उन्होंने पारंपरिक साहित्यिक रूपों के साथ नई युक्तियों को अपनाने की सलाह दी, जिससे बिना किसी बाधा और सीमा के साहित्य की रचना की जा सके। डॉ. राय ने नए रचनाकारों को सलाह दी कि आधुनिक युग तकनीक का युग है, नई तकनीक का उपयोग का करते हुए अपनी परंपराओं एवं संस्कृति से जुड़े रहना, उनकी रचनाधर्मिता के लिए अवश्य अवयव का काम करेगा।

अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने परिसंवाद के आयोजन में सहयोग देने के लिए कॉलेज के प्रति आभार व्यक्त किया।

सुब्रह्मण्यम ने बदलती दुनिया के संदर्भ में साहित्यकारों को नूतन भाषा अपनाने के लिए कहा क्योंकि पुरातन भाषा आधुनिक भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकती। उन्होंने कहा कि साहित्य की रचना साहित्यिक सिद्धांतों को अपने मस्तिष्क में रखकर नहीं की जा सकती।

अंत में बसंत महिला कालेज की प्राचार्या प्रो. बी.के. पुष्पलता ने आभार व्यक्त किया।

उद्‌घाटन व्याख्यान देते हुए डॉ. बी.ए. विवेक राय

बाल साहित्य के अनुवाद (बाङ्ला से अंग्रेज़ी) पर परिसंवाद

20 सितंबर 2014, कोलकाता

कोलकाता स्थित साहित्य अकादेमी सभागार में दिनांक 20 सितंबर 2014 को साहित्य अकादेमी द्वारा 'बाङ्ला से अंग्रेज़ी में' बाल साहित्य के अनुवाद पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों और विद्वानों का स्वागत करते हुए अनूदित साहित्य के लाभ से विशेषकर बाल साहित्य के अंग्रेज़ी में किए गए अनुवाद से सभी को अवगत कराया। उन्होंने मूल भाषा से अंग्रेज़ी में किए जानेवाले बाल साहित्य के अनुवाद से विभिन्न भाषाओं के बच्चों को होनेवाले लाभ से भी अवगत कराया। उन्होंने अनुवाद करने में होनेवाली कठिनाइयों का भी विश्लेषण किया, लेकिन साथ ही यह भी बताया कि बाल साहित्य पुरस्कार किस प्रकार से इन कठिनाइयों को दूर करने में मददगार है। इस अवसर पर बाङ्ला के प्रसिद्ध नाट्य व्यक्तित्व शमीक बंद्योपाध्याय ने भाषा और संस्कृति जैसी समस्याओं पर विचार करते हुए कहा कि यही वे सबसे बड़ी बाधाएँ हैं जो समय-समय पर बाल साहित्य के अनुवाद में आड़े आती रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इसके बावजूद इस हकीकत से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अभी भी बाङ्ला से अंग्रेज़ी में होनेवाले अनुवाद की स्थिति काफ़ी दयनीय है। साहित्य अकादेमी के पूर्व सचिव और प्रसिद्ध लेखक प्रो. के सच्चिदानंदन ने अनुवाद के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस तरह के महत्त्वपूर्ण परिसंवादों को आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को बधाई का हकदार बताया। प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने कहा कि यह सच है कि अभी भी साहित्य का बहुत बड़ा भाग अनुवाद से वंचित है। उन्होंने स्वयं का उदाहरण देते हुए कहा कि वे ग्रामीण पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए जो साहित्य लिख रहे हैं, उसका भी अंग्रेज़ी में सही-सही अनुवाद हो पाएगा, इस पर भी उन्हें संदेह है। श्रीमती भारती राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें श्री पार्थ घोष, प्रो. सुकांत चौधुरी और श्री सुखेंदु राय ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री पार्थ घोष ने बाल साहित्य के लिए लिखे जा रहे विज्ञानपरक लेखों पर बात की। प्रो. सुकांत चौधुरी ने भाषा की समस्या पर बात की, जो बाल साहित्य के अनुवाद में समस्या पैदा करती है। श्री सुखेंदु राय ने उन कठिनाइयों पर विस्तार से चर्चा की, जो बाल साहित्य के अनुवाद के वक्त पैदा होती हैं। दूसरे सत्र की प्रो. अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन ने की, जिसमें प्रो. इप्शिता चंदा, श्रीमती सोमा चटर्जी और प्रो. अनुसूया गुहा जैसे विद्वानों ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन वक्ताओं ने अपने आलेखों के जरिए उन तत्त्वों पर प्रकाश डाला, जो बाल साहित्य के अनुवाद में कठिनाइयाँ पैदा करते हैं। उन्होंने इस संदर्भ में जादुई यथार्थवाद के अनुवाद और विदेशी लेखन की प्रस्तुति संबंधी समस्याओं का जिक्र किया।

श्रीमती सुजाता सेन ने समापन भाषण देते हुए एक प्रकाशक की दृष्टि से अनुवाद के बाज़ारी और पाठकों की मांग पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अयेकपाम श्यामसुंदर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

21 सितंबर 2014, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी और नाहारोल साहित्य प्रेमी समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 21 सितंबर 2014 को इंफ़ाल के दवे साहित्य केंद्र में मणिपुरी के प्रसिद्ध लेखक अयेकपाम श्यामसुंदर की जन्मशतवार्षिकी के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के सदस्य श्री ए.सी. नेत्रजीत ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया कि वह इस तरह के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम इंफ़ाल में आयोजित करवा रही है। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने इस तरह के कार्यक्रमों की महत्ता और प्रासंगिकता पर संक्षेप में बोलते हुए अयेकपाम श्यामसुंदर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। श्री लेईस्राम वीरेंद्र कुमार सिंह ने अपने बीज-भाषण में अयेकपाम श्यामसुंदर के लेखन के विभिन्न आयामों की चर्चा की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. पोलेम नबचंद्र सिंह ने अयेकपाम श्यामसुंदर के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए युवाओं से अपने प्राचीन गौरवमयी एवं महान् साहित्य को शोध का विषय बनाने की गुज़ारिश की। इस सत्र में लेइमायुम वीरेंद्रकुमार शर्मा द्वारा अनूदित 'चैम्मीन' का भी लोकार्पण किया गया। नाहारोल साहित्य प्रेमी समिति के महासचिव डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र जिसकी अध्यक्षता श्री लेइमायुम वीरेंद्रकुमार शर्मा ने की थी, उसमें अथोकपम खोलचंद्रा डॉ. गुरुमायुम बिजयकुमार शर्मा और डॉ. लामाबाम गजेंद्र जैसे विद्वानों ने अयेकपाम श्यामसुंदर के जीवन और बहुआयामी कृतित्व पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि अयेकपाम श्यामसुंदर एक सृजनात्मक लेखक होने के साथ-साथ एक कुशल अभिनेता और निर्देशक भी थे। दूसरे सत्र अध्यक्षता श्री बी. जनताकुमार शर्मा ने की, जिसमें डॉ. राजेन तोईजांबा, श्रीमती आरके मुसुक्षना और डॉ. चिरोम राजकेतन सिंह ने अयेकपाम श्यामसुंदर को एक नाटककार के रूप में पेश करते हुए अपने-अपने आलेख पढ़े। इस सत्र में कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने भी श्री अयेकपाम श्यामसुंदर के कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

राजकुमार शीतलजीत जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

22 सितंबर 2014, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी और लेईमाकोल खोरजेइकोल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 22 सितंबर 2014 को इंफ़ाल के दवे साहित्य केंद्र में मणिपुरी के प्रसिद्ध लेखक राजकुमार शीतलजीत के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी गौतम पॉल ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए राजकुमार शीतलजीत के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला, उन्होंने राजकुमार शीतलजीत द्वारा बंगाल और मणिपुर के बीच सांस्कृतिक और साहित्यिक सेतु बनाने के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. ख. सरोजिनी देवी ने मणिपुरी के इस महत्त्वपूर्ण लेखक के जीवन से जुड़ी कुछ दिलचस्प बातें श्रोताओं को बताई और वे किस तरह से लेखकों की कई पीढ़ियों को प्रेरित करते रहे हैं; इस बात पर भी प्रकाश डाला। वहीं डॉ. एस. शांतिबाला देवी ने बीज भाषण देते हुए राजकुमार शीतलजीत को मणिपुरी की आधुनिक कहानियों का प्रवर्तक बताते हुए कहा कि वे न केवल बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, वरन् आधुनिक मणिपुरी साहित्य के जन्मदाताओं में से एक थे। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. एच. बिहारी सिंह ने राजकुमार शीतलजीत को एक ऐसा साधक लेखक बताया, जिन्होंने मणिपुरी साहित्य और समाज को एक राष्ट्रीय पहचान दिलाई। डॉ. माया नेप्रोम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्ययक्षता प्रो. ए.के. शर्मा ने की, जिसमें श्री शोराम केशो सिंह, श्री काकचिङताबाम् ब्रजमणि शर्मा और डॉ. अरमबम ओङबी मैमचौबी जैसे विद्वानों ने राजकुमार शीतलजीत के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके लेखन पर वैष्णव मत का प्रभाव बताया। दूसरे

सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी. एच. आइबोयामा शर्मा ने की, जिसमें डॉ. हेइग्रुरूजाम् सुमबतिबाला देवी, डॉ. हेमन शीला देवी और खुंदोङबम गोकुल चंद्र सिंह जैसे विद्वानों ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए राजकुमार शीतलजीत के उपन्यासों और कहानियों पर प्रकाश डाला और उनके मणिपुरी साहित्य को आधुनिक बनाने में दिए गए योगदान की सराहना की।

'मैथिली गीत काव्य की परंपरा और विकास' पर संगोष्ठी

20-21 सितंबर 2014, दरभंगा

साहित्य अकादेमी और एमआरएम कॉलेज, दरभंगा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 20-21 सितंबर, 2014 को दरभंगा में 'मैथिली गीत काव्य की परंपरा और विकास' पर एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्य अधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा इस तरह के अनेक आयोजनों की पहलक़दमी पर संक्षेप में प्रकाश डाला। डॉ. रामदेव झा ने सत्र की अध्यक्षता की एवं ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. साकेत कुशवाहा ने उद्घाटन भाषण दिया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वीणा ठाकुर ने आरंभिक वक्तव्य दिया। सत्र में श्री ताराकांत झा ने अपना बीज भाषण दिया जबकि एमआरएम कॉलेज के प्राचार्य डॉ. विद्यानाथ झा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस सत्र में प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक बनफूल द्वारा लिखित और साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित उपन्यास *हाट-बाजार* के मैथिली संस्करण का साकेत कुशवाहा ने लोकार्पण भी किया। ग़ौरतलब है कि बनफूल के इस प्रसिद्ध उपन्यास का मैथिली अनुवाद डॉ. वीणा ठाकुर ने किया है।

इस दो दिवसीय आयोजन को चार अकादेमिक सत्रों में विभाजित किया गया था, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः डॉ. देवकांत झा, डॉ. इंद्रकांत झा, डॉ. योगानंद झा और श्री पंचानन मिश्र ने की। इन सभी सत्रों में श्री फूलचंद झा 'प्रवीण', डॉ. अमरनाथ झा, डॉ. अशोक मेहता, डॉ. आशा मिश्रा, डॉ. नीरा झा, डॉ. दमन कुमार झा, डॉ. कमला चौधरी, डॉ. प्रीति झा, डॉ. शंकर देव झा, डॉ. रमण झा, डॉ. महेंद्र नारायण राम और मुरलीधर झा ने मैथिली गीत काव्य के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. नारायण झा, डॉ. श्री शंकर झा, डॉ. मंजर सुलेमान और डॉ. उषा चौधरी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. रूप नारायण चौधरी ने की, जबकि समापण भाषण डॉ. धीरेंद्र नाथ मिश्र ने दिया।

'राजस्थानी निबंध' पर परिसंवाद

25 सितंबर 2014, श्रीडुंगरगढ़

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति के सहयोग से 25 सितंबर 2014 के श्रीडुंगरगढ़ में 'राजस्थानी निबंध' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सहायक संपादक शांतनु गंगोपाध्याय ने प्रतिनिधियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक अर्जुनदेव चारण ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए निबंधकार की तुलना शतावधानी से करते हुए कहा कि वह एक ऐसा ही व्यक्ति होता है, जो सौ घोड़ों को अपने नियंत्रण में रखता है। प्रसिद्ध राजस्थानी निबंधकार ज़हूर ख़ाँ मेहर ने अपने बीज वक्तव्य में निबंध को एक विधा के रूप में परिभाषित किया। परिसंवाद के दो सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः डॉ. मदन सैनी एवं डॉ. चेतन स्वामी ने की तथा छह विद्वानों डॉ.

सत्र का एक दृश्य

मंगल बादल, डॉ. नमामि शंकर आचार्य, डॉ. गजदान चरण 'शक्तिसुत', डॉ. अर्जुन सिंह उज्ज्वल, श्री गिरधारी दास इतानू एवं श्री शंकर सिंह राजपुरोहित ने अपने आलेखों में राजस्थान की साहित्य में निबंध की अवधारणा एवं विकास पर चर्चा की। समापन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री श्याम महर्षि ने की एवं समापन भाषण डॉ. किरण नाहटा ने दिया।

'बोडो लघुपत्रिकाएँ एवं समाज पर उनका प्रभाव' विषयक संगोष्ठी

26 सितंबर 2014, सोनितपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता ने बोडो साहित्य सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बोडो लघुपत्रिकाएँ और समाज पर उनका प्रभाव' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन रंगपारा कॉलेज, सोनितपुर, असम में 26 सितंबर 2014 को किया।

प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने बोडो भाषा एवं साहित्य के बारे में बात की तथा महत्त्वाकांक्षी युवाओं के लिए उपलब्ध अवसरों को इंगित किया। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष डॉ. कामेश्वर ब्रह्म ने कहा कि इस प्रकार की संगोष्ठी की महत्ता सामाजिक अखंडता एवं अन्य संस्कृतियों और परंपराओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने में निहित है। अपने आरंभिक वक्तव्य में प्रो. प्रशांत बोरो ने विभिन्न सामाजिक वर्गों की वर्तमान स्थितियों का जायज़ा लेते हुए उन पर लघु पत्रिकाओं के प्रभावों की चर्चा की। डॉ. अनिल कुमार बोरो ने अपने उद्घाटन भाषण में पूर्वोत्तर में लघु पत्रिकाओं के उद्भव पर चर्चा की, विशेषतः बोडो एवं आशा व्यक्त की कि लोगों को उस संगोष्ठी के द्वारा लाभ उठाने का अवसर प्राप्त होगा। श्री बिस्वेश्वर बसुमतारी ने अपने बीज वक्तव्य में लघुपत्रिकाओं की समस्याओं के बारे में बात की और कहा कि जब तक अधिक भागीदारी नहीं होगी समाज में उनकी भूमिका कम होगी। बोडो साहित्य सभा के सचिव श्री प्रशांत बोरो ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री गोपीनाथ ब्रह्म ने की तथा श्री प्रमोद च-ब्रह्मा और डॉ. तुलान माताहरी ने क्रमशः '1952-1972 के दौरान प्रकाशित लघु पत्रिकाएँ

सर्वश्री बिस्वेश्वर बसुमतारी, प्रेमानंद मसाहारी, कामेश्वर ब्रह्म तथा बनेश्वर तालुकदार

तथा 1974-2002 के दौरान प्रकाशित लघु पत्रिकाएँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री नवीन मल्ल बोरो ने की एवं डॉ. चिनन नार्ज़ारि तथा डॉ. फ़ागुन ब्रह्मलिया ने 2003 से अद्यतन प्रकाशित लघु पत्रिकाओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र में हुए प्रो. बनेस्वर तालुकदार ने कहा कि लघु पत्रिकाओं के प्रमाण की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। समापन वक्तव्य देते हुए श्री दीपक कुमार बसुमतारी ने स्वस्थ साहित्यिक परिवेश के निर्माण में लघु पत्रिकाओं की भूमिका को संदर्भित करते हुए इनकी आवश्यकता को रेखांकित किया। बोडो साहित्य सभा के श्री कमला कांत मसाहारी ने आभार व्यक्त किया।

महेश्वर नीयोग जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

26 सितंबर 2014, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी और गुवाहाटी विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 24 सितंबर 2014 को गुवाहाटी विवि के फनीधर दत्त सभागार में प्रसिद्ध असमिया विद्वान महेश्वर नीयोग की जन्मशतवार्षिकी के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी अधिकारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों और विद्वानों का स्वागत करते हुए महेश्वर नीयोग के जीवन और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला। इस अवसर पर गुवाहाटी विवि की कुलपति डॉ. मृदुला मुखर्जी ने साहित्य अकादेमी के प्रति आभार जताया कि अकादेमी ने गुवाहाटी विवि को इस संगोष्ठी के लिए चुना। मुखर्जी ने संगोष्ठी में सम्मिलित प्रतिभागियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। इस संगोष्ठी के दौरान साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने महेश्वर नीयोग पर लिखित पुस्तक *'प्राच्यतत्त्वविद् डॉ. महेश्वर नीयोग कृति और कृतित्व'* का भी लोकार्पण किया। उन्होंने डॉ. महेश्वर नीयोग को बहुमुखी प्रतिभा का धनी बताया। उद्घाटन सत्र में ही प्रो. दीप्ति फूकन पातगिरि ने डॉ. महेश्वर नीयोग की लेखनी में अपनाई गई विविध शैलियों पर बातचीत की। प्रो. कमालुद्दीन अहमद और प्रो. नगेन सइकिया ने अपना मुख्य भाषण देते हुए महेश्वर नीयोग की बहुमुखी प्रतिभा के बारे में चर्चा की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. मालिनी गोस्वामी ने की, जिसमें डॉ. प्रदीप ज्योति महांति, डॉ. पोना महंत और डॉ. अंजलि शर्मा ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए महेश्वर नीयोग के कृतित्व के विभिन्न पक्षों, जैसे—महेश्वर नीयोग की गद्य की शैली, उनके द्वारा लिखे गए जीवन चरित्र और उनके साहित्य में असमिया साहित्यिक सिद्धांतों का कहाँ तक पालन हुआ है, पर समान रूप से प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रवीण चंद्र दास ने की, जिसमें डॉ. तरणी डेका, डॉ. प्रफुल्ल कुमार नाथ, प्रो. कमालुद्दीन अहमद, प्रो. विमल मजुमदार और डॉ. प्रांजल शर्मा वशिष्ठ जैसे विद्वानों ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत किया और महेश्वर नीयोग की असम के राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका, उनके द्वारा किया गया वैष्णव साहित्य का अध्ययन, शंकरदेव के साहित्य का अध्ययन और धर्म का ऐतिहासिक दृष्टि से किया गया अध्ययन आदि पक्षों पर पर्याप्त रूप से प्रकाश डाला। तीसरे सत्र में डॉ. प्रणिता देवी, डॉ. रेखारानी देवी, डॉ. कल्पना शर्मा कलिता, डॉ. प्रसन्न कुमार नाथ, डॉ. अनूप कुमार नाथ और डॉ. लक्ष्मी हजारिका जैसे विद्वानों/विदूषियों ने डॉ. महेश्वर नीयोग के विभिन्न साहित्यिक पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने महेश्वर नीयोग की काव्य भाषा, नीयोग द्वारा लिखे गए असमी साहित्य के इतिहास, प्राचीन पांडुलिपियों का संपादन और महेश्वर

नीयोग की असमी कविताएँ : एक बहस, लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ का महेश्वर नीयोग द्वारा किया गया अध्ययन और डॉ. महेश्वर नीयोग : नाटककार और उपन्यासकार जैसे विविध विषयों पर समान रूप से चर्चा की। इस कार्यक्रम का समापन भाषण प्रो. उपेन राभा हाकचम ने दिया जबकि धन्यवाद ज्ञापन प्रो. कनक चंद्र सहरिया ने किया।

नेपाली अनुवाद पर परिसंवाद

26 सितंबर 2014, मिरिक

साहित्य अकादेमी और साहित्य सुनौं परिवार, मिरिक के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 26 सितंबर 2014 को पश्चिम बंगाल के मिरिक में 'नेपाली अनुवाद' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम में भाग लेने आए प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में की जा रही पहलक़दमियों पर संक्षेप में रोशनी डाली। श्रीमती कमला राई ने सत्र की अध्यक्षता की, श्री सचेन राई ने उद्घाटन भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा प्रख्यात नेपाली लेखक राजबहादुर राई ने बीज भाषण दिया, जबकि श्री सतीश रसाइली ने बतौर मुख्य अतिथि नेपाली अनुवाद की व्यापकता पर प्रकाश डाला। साहित्य सुनौं परिवार के संयोजक श्री माधव बुढ़ाथोकी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

विचार सत्र की अध्यक्षता श्री यज्ञनिधि ढ़काल ने की, जिसमें श्री जीवन राणा, श्री युवराज काफ्ले और श्रीमती सृजना सुब्बा जैसे तीन नेपाली विद्वानों ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए नेपाली में कविताओं के अनुवाद, नेपाली में गद्य का अनुवाद और अन्य भाषाओं से नेपाली में अनुवाद की चुनौतियाँ जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

'बोडो साहित्य में स्त्री विमर्श' पर परिसंवाद

27 सितंबर 2014, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी और गुवाहाटी विश्वविद्यालय के बोडो विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 27 सितंबर 2014 को गुवाहाटी विवि के बोडो विभाग में 'बोडो साहित्य में स्त्री विमर्श' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने आए हुए प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। उद्घाटन भाषण देते हुए डॉ. दीप्ति फूकन पातगिरि ने आयोजन के विषय और अवधारणा की सराहना की। प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी

गौतम पॉल, प्रेमानंद मसाहारी, फणिधरनाथ नार्ज़ारी तथा दीप्ति फूकन पातगिरि

ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए इस तरह के आयोजन को वर्तमान समय की आवश्यकता बताया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने बोडो साहित्य की समृद्धि में महिला साहित्यकारों की भूमिका और योगदान पर संक्षिप्त रूप से चर्चा की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रेमानंद मसाहारी ने की, जिसमें श्रीमती मैकन बसुमतारी, श्रीमती दीपाली खेरखैतरी, श्रीमती रूपाली सोरगियारी और श्रीमती मल्लिका बसुमतारी जैसी चार विदुषियों ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए प्राचीन और आधुनिक महिला लेखन में परिवर्तन, नीलकमल ब्रह्म के पाँच कहानी-संग्रहों में अशिक्षित और शिक्षित महिलाओं का वर्णन, कवयित्रियों का आत्मगौरव और चित्रा झा मसाहारी के उपन्यासों में महिलाओं का चित्रण जैसे विषयों पर समान रूप से चर्चा की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री विरुपाक्ष गिरि बसुमतारी ने की, जिसमें श्रीमती चम्पा खाखलरी, डॉ. प्रतिमा ब्रह्म, श्रीमती भैरवी बोरो और श्रीमती राहेल मसाहारी जैसी विदुषियों ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए ओवेल गोरबोनी राडेल के साहित्य में महिला पात्र, महिला कथा लेखिकाओं की दृष्टि से महिला पात्रों का वर्णन, बोडो लेखक (पुरुष) की दृष्टि में बोडो महिलाएँ और मा' ओरा जान लाहारी के उपन्यासों में नारी पात्र जैसे विषयों पर समान रूप से प्रकाश डाला। डॉ. स्वर्ण प्रभा चैनारी ने कार्यक्रम के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'साहित्य में सामाजिक परिवेश' विषयक परिसंवाद

27 सितंबर 2014, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 27 सितबंर 2014 को मुंबई में 'साहित्य में सामाजिक परिवेश' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ गुजराती कथाकार श्री किरीट दूधत द्वारा किया गया। क्षेत्रीय सचिव कृष्ण किंबहुने ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि आज के चार पश्चिम क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के उन्नयन के लिए हमें उनकी परंपराओं एवं साहित्य को समझना होगा। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री किरीट दूधत ने गुजराती कहानी की परंपरा का उल्लेख करते हुए हिमांशी शेलत, बिंदु भट्ट, महेंद्र परमार, कांजी पटेल, अजित ठाकोर एवं मोहन परमार की कहानियों में सामाजिक सरोकार को रेखांकित किया।

पश्चिम क्षेत्रीय मंडल के संयोजक श्री तानाजी हलर्णकर ने परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि सामाजिक सरोकार हर लेखक और भाषा का अलग हो सकता है और सामाजिक सरोकार साहित्य को प्रभावित भी करता है। कला का साहित्यिक कर्म भी सामाजिक सरोकार को प्रभावित कर सकता है। अकादेमी के सिंधी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में श्री कांतिभाई मालसत्तार (गुजराती), श्री एडविन जे. एफ़. डिसूज़ा (कोंकणी), श्रीमती कमला गोकलाणी (सिंधी) एवं कृष्ण किंबहुने ने रणधीर शिंदे (मराठी) का आलेख प्रस्तुत किया। श्री मालसत्तार ने कहा कि गुजराती की मुख्यधारा की कविता की बनिस्बत गुजराती लोक साहित्य में सामाजिक सरोकार का अध्ययन अधिक उपयुक्त ढंग से किया जा सकता है। समकालीन गुजराती दलित साहित्य में गुजराती सामाजिक माहौल को सार्थक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। श्री एडविन डिसूज़ा ने अपने आलेख में कोंकणी भाषा की लिपि की समस्या पर प्रकाश डाला। इस आलेख में इस बात की भी चर्चा की गई कि धर्म साहित्य में किस प्रकार से हस्तक्षेप करता है। श्री रणधीर शिंदे के आलेख में मराठी कथाकारों द्वारा किस प्रकार सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण को सार्थक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, इस बात पर चर्चा की गई। श्रीमती कमला गोकलाणी ने अपने आलेख में कहा कि सिंधी

कविता पर 20 वीं शताब्दी के पहले अरबी एवं फ़ारसी साहित्य का प्रभाव था। बीसवीं शताब्दी के बाद सिंधी साहित्य पर सामाजिक सरोकार का प्रभाव देखा जा सकता है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक श्री भालचंद्र नेमाड़े ने की। श्री प्रवीण पंड्या (गुजराती) श्री एन. शिवदास (कोंकणी) श्री महेंद्र भवरे (मराठी) एवं श्री जेठो लालवाणी (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री प्रवीण पंड्या ने अपने आलेख में इंगित किया कि राजनीति, बाज़ार, मनोरंजन एवं तथाकथित 'इज़्म' के बावजूद कई गुजराती लेखकों के यहाँ वास्तविक सामाजिक मुद्दे पीछे टूट जाते हैं। ज़वेर चंद मेघानी, जयंती दलाल, सितांशु यशश्चंद्र एवं श्री राजेंद्र शाह ने प्रभावी ढंग से अपनी रचनाओं में सामाजिक सरोकार प्रस्तुत किए हैं। श्री एन. शिवदास ने कहा कि कोंकणी में सामाजिक सरोकार को गोवा के समुदाय जैसे हिंदू एवं कैथोलिक समाज को प्रतिबिंबित किया गया है। श्री महेंद्र भवरे ने अपने आलेख में मराठी दलित साहित्य की परंपरा का उल्लेख किया। श्री जेठो लालवाणी ने समकालीन सिंधी साहित्य में सामान्यतः महानगरों के मानवीय जीवन को प्रतिबिंबित किया।

परिसंवाद में प्रस्तुत किए गए आलेखों में एक बात समान रूप से उभर कर सामने आई कि रचनाकार चाहे किसी भी भाषा का हो, अपने समाज, अपनी परंपरा, अपनी रीतियों से अलग नहीं रह सकता, उसकी रचनाओं में उसका समाज किसी ना किसी रूप में अवश्य प्रतिबिंबित होगा। परिसंवाद ने विमर्श एवं चिंतन के नए दरवाज़े खोले।

कुमाउनी भाषा सम्मेलन

27-28 सितंबर 2014, अल्मोड़ा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और हिंदी विभाग, कुमाउनी विश्वविद्यालय और कुमाउनी भाषा साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति, अल्मोड़ा ने मिलकर दिनांक 27-28 सितंबर 2014 को कुमायूं विवि के विजुअल आर्ट फ़ैकल्टी सेमिनार हॉल में कुमाउनी भाषा पर एक दो दिवसीय सम्मलेन का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और विद्वानों का स्वागत करते हुए सम्मलेन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और कहा कि इस सम्मलेन के ज़रिए हम कुमाउनी भाषा के अतीत, वर्तमान और भविष्य को सामने लाना चाहते हैं। श्री राव ने इस संदर्भ में भाषा सम्मान पर भी बात की। कुमाउनी विवि परिसर अल्मोड़ा के निदेशक श्री आरएस पथनी ने उद्घाटन भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा उठाए गए इस क़दम की सराहना की और आशा व्यक्त की कि इस तरह के सम्मलेन भविष्य में कुमाउनी साहित्य की समृद्धि में अपना योगदान देंगे। डॉ. शेर सिंह बिष्ट ने बीज भाषण देते हुए कुमाउनी भाषा की समृद्ध विरासत, वाचिक परंपराएँ और प्रकाशित कृतियों पर प्रकाश डाला।

सत्रांत में साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सम्मलेन को सात भागों में बाँटा गया था, जिसमें विद्वानों, लेखकों और कवियों ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कुमाउनी भाषा, बोली, कुमाउंनी गद्य, उपन्यास, कविताएँ, पत्रकारिता, वाचिक परंपराएँ और लोक साहित्य पर समान रूप से चर्चा की। इन विषयों पर बात करनेवाले विद्वानों में सम्मिलित थे—श्रीमती चंद्रकला रावत, श्री भवानी दत्त कांडपाल, श्रीमती दया पंत, श्रीमती दिवा भट्ट, श्रीमती नीरजा टंडन, श्री ललित जोशी और श्रीमती गीता गोवाडी। सम्मेलन के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत कुमाउनी लोकगीत और नृत्य का भी प्रदर्शन किया गया। इस सम्मेलन में 12 कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ भी किया। सम्मेलन के अंत में साहित्य अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मनजीत कौर भाटिया ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

नेपाली बाल साहित्य पर परिसंवाद

28 सितंबर 2014, गांतोक

साहित्य अकादेमी और सिक्किम अकादमी, गांतोक के संयुक्त तत्त्वावधान में 28 सितंबर, 2014 को सिक्किम की राजधानी गांतोक में 'नेपाली बाल साहित्य' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने उद्घाटन सत्र में आगत अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बाल साहित्य के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा ली गई अनेक पहलक़दमियों का संक्षेप में ज़िक्र किया। पद्मश्री सानु लामा ने सत्र की अध्यक्षता की, सिक्किम अकादेमी के अध्यक्ष श्री पेम्पा तमांग ने उद्घाटन भाषण दिया, श्री रूद्र पौद्याल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने आरंभिक वक्तव्य दिया, जबकि सिक्किम विश्वविद्यालय के डीन डॉ. प्रतापचंद्र प्रधान ने बीज भाषण दिया। डॉ. प्रतापचंद्र प्रधान ने बाल साहित्य के लेखन में आनेवाली समस्याओं के बारे में बात की और बताया कि नेपाली साहित्यिक समुदाय किस तरह से इन चुनौतियों का सामना करता है। सत्रांत में साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री प्रद्युम्न श्रेष्ठ ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

विचार सत्र की अध्यक्षता डॉ. शांति छेत्री ने की, जिसमें श्री भीम प्रधान, डॉ. कविता लामा और श्रीमती स्नेहलता राई ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए नेपाली बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति और उसके लेखकों के समक्ष आनेवाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला। नेपाली साहित्य परिषद्, सिक्किम के अध्यक्ष श्री पारसमणि डुंगाल ने कार्यक्रम का संचालन और अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

संजीवदेव जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

28 सितंबर 2014, तेनाली

साहित्य अकादेमी ने 28 सितंबर, 2014 को तेनाली में यशस्वी तेलुगु लेखक संजीवदेव पर एक दिवसीय परिसंवाद आयोजित किया।

उद्घाटन सत्र में कार्यक्रम अधिकारी श्री के. पी राधाकृष्णन ने आगत अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और साहित्य अकादेमी की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए अकादेमी द्वारा साहित्य को पूरे भारतवर्ष में लोकप्रिय बनाने के प्रयत्नों की संक्षेप में चर्चा की। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. वेल्गा वेंकटपैय्या ने उद्घाटन भाषण देते हुए तेलुगु साहित्य में तेनाली जैसे स्थान की महत्ता पर प्रकाश डाला और तेनाली के कुछ महान् पूर्वजों को याद किया। डॉ. वेंकटपैय्या ने संजीवदेव पर परिसंवाद आयोजित करने के लिए और तेनाली को परिसंवाद की जगह बनाने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया और अधिकारियों से निवेदन किया कि वे संजीवदेव की एक प्रतिमा को स्थापित करते हुए उनके नाम से पाठ्यपुस्तक प्रकाशित करें। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. संजीवदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की और संजीवदेव की रचनाओं की गुणवत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस तरह उनकी रचनाओं में समाज के एक बड़े हिस्से की बात कही गई है। डॉ. गोपी ने बताया कि किस तरह तुम्मापुड़ी नामक एक छोटा-सा गाँव डॉ. संजीवदेव की रचनाओं में ज़िंदा है। तेलुगु अकादेमी के पूर्व निदेशक डॉ. वी. कोंडलराव ने डॉ. संजीवदेव की लेखनी और चित्रकला कृतियों पर बात की और कहा कि उनका मूल्य चिरस्थायी है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता कहानीकार सिंगमानेनी नारायण ने की, जिसमें डॉ. टी. रविचंद, डॉ. लक्ष्मण चक्रवर्ती, श्री मुथेवी रवीन्द्रनाथ, डॉ. कादियाला राममोहन राय और डॉ. सी. नागभूषणम् ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत किया। सभी वक्ताओं ने डॉ. संजीवदेव

की लेखनी और कविताओं में सौंदर्य और उदात्त मूल्यों की खोज करते हुए उन्हें आंध्रप्रदेश का सार्वकालिक महान् लेखक बताया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता 'गुंटूर राइटर्स एसोसिएशन' के अध्यक्ष श्री सोमपल्ली वेंकट सुब्बैया ने की, जिसमें डॉ. बी. सुंदर राव, श्री कोट्टापल्ली रविबाबू, श्री मोदुगुला रविकृष्ण, श्री एन.आर. तपस्वी और श्री मुंगरा जाशुआ जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत किया। वक्ताओं ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से डॉ. संजीवदेव की भूमिकाओं, आलोचना, पत्र, अंग्रेज़ी लेखन और उनके जीवन दर्शन पर समान रूप से प्रकाश डाला। श्री रावेला संबाशिवराव ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. संजीवदेव के जीवन के अनेक दृष्टांतों को सामने रखा। श्री वादरेवु चीना वीराभद्रुडु ने समापन भाषण दिया, जबकि श्री इनला मलेश्वरराव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'साहित्य और पर्यावरण' अभियान पर परिसंवाद

1 अक्टूबर 2014, नई दिल्ली

"पर्यावरण के मुद्दों पर लिखे जा रहे साहित्य को विभिन्न भाषाओं में परस्पर अनुवाद के ज़रिए पूरे देश के पाठकों के लिए साझा करना चाहिए। इसके लिए हमें साहित्य की परिभाषा का भी विस्तार करना होगा। साथ ही 'साहित्य' और 'साहित्येतर' की दूरियों को भी कम करना होगा।" उक्त विचार प्रख्यात पर्यावरणविद् श्री अनुपम मिश्र ने आज साहित्य अकादेमी द्वारा 'साहित्य और पर्यावरण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सामने रखे। उन्होंने कई मराठी, बाङ्ला, गुजराती कृतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी में इस तरह के साहित्यिक प्रयास बेहद कम हैं। प्राचीन संतों के प्रकृति लेखन का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि हमें आज भी प्रकृति के साथ उदार और विनम्र व्यवहार करना होगा तभी उसका संरक्षण संभव है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में आए सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक श्री विंदेश्वर पाठक ने कहा कि कोई भी आंदोलन तभी आम जनता को याद रहता है, जब वह साहित्य में स्थान पाता है। साहित्य हमारे जन आंदोलनों को शाश्वत बनाता है। उन्होंने कहा कि हमें गाँधी साहित्य को केवल सहेजकर ही नहीं रखना है, बल्कि उसको प्रयोग में लाने की भी आवश्यकता है। नई पीढ़ी तभी साहित्य और पर्यावरण आंदोलनों से जुड़ेगी।

प्रख्यात कवयित्री अनामिका ने अपनी कविताओं के साथ कहा कि हर कालखंड में कुछ न कुछ हमारी आँख की किरकिरी का सबब होता है, जैसे वर्तमान में पर्यावरण/विस्थापन और भूमंडलीकरण से उपजी कई नीतियाँ हैं। साहित्य में इन संकटों की आहट तो है, किंतु वह एक बंद गुफ़ा से आती प्रतीत होती है। साहित्य में यह चेतावनियाँ दर्ज़ होनी चाहिए।

प्रो. अपूर्वानंद ने कहा कि हम पर्यावरण से केवल प्रकृति को ही जोड़ते हैं, जबकि इस से प्रदूषण, विकास, युद्ध जैसे शब्द और इन से उपजी हिंसा सामने आती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र द्वारा संचालित सभी विकास की परियोजनाएँ दक्षिण एशियाई देशों में बड़े पैमाने पर विस्थापन, हिंसा और युद्ध के हालात पैदा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि आज के साहित्य को इन बड़े बिंदुओं पर विचार किए बिना नहीं लिखा जाना चाहिए, स्वच्छता की बात इन सभी समस्याओं के हल के बाद ही संभव है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रसिद्ध मलयाळम् कवि प्रो. के. सच्चिदानंदन जी ने कहा कि हमारा वर्तमान और देश पर्यावरण की विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है और ऐसा हमारी ग़लत नीतियों के कारण ही हो रहा है। उन्होंने केरल के साहित्यकारों द्वारा 'सायलेंट वैली' बचाने के लिए किए गए जन आंदोलन का ज़िक्र करते हुए कहा कि हमें लेखन के साथ-साथ व्यापक रूप से उन परियोजनओं पर पुनर्विचार करना होगा, जो हमारे पर्यावरण को नुक़सान पहुँचा रही हैं।

परिसंवाद के बाद हुए कविता पाठ में श्री एच. के. कौल सुब्रत, श्री बोंडो, श्री सोमदत्त शर्मा और श्री मोहनजीत ने पर्यावरण से संबंधित अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

'स्वच्छभारत' अभियान के तहत साहित्य अकादेमी द्वारा इस कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पर्यावरण जो हमारे प्राचीन साहित्य का आधार रहा है, को एक बार नए सिरे से परखने की ज़रूरत है। हमारी मन की स्वच्छता भी ज़रूरी है और यह कार्य साहित्य से बेहतर और कोई नहीं कर सकता। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणुमोहन भान ने किया।

'पंजाबी बाल साहित्य' पर परिसंवाद

5 अक्टूबर 2014, बरनाला

साहित्य अकादेमी और कोमांत्री पंजाबी ईलम् के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 5 अक्टूबर 2014 को गोविंद बंसल चैरिटेबल ट्रस्ट, बरनाला के सभाकक्ष में 'पंजाबी में बाल साहित्य' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मनजीत कौर भाटिया ने आगत अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए देश की 24 भाषाओं में लिखे जा रहे और लिखे गए बाल साहित्य के संवर्द्धन हेतु अनेक पहलक़दमियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने अपने आरंभिक भाषण में पंजाबी बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति और उसकी संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए पंजाबी बाल साहित्य के लेखकों के सामने आनेवाली चुनौतियों का भी ज़िक्र किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. दीपक मनमोहन सिंह ने पंजाबी बाल साहित्य के संवर्द्धन हेतु आगे आ रहे बाल साहित्यकारों का ज़िक्र करते हुए कहा कि पंजाबी बाल साहित्य का भविष्य बहुत उज्ज्वल है, साथ ही उन्होंने आगाह किया कि पंजाबी बाल साहित्य को बदलती परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए दूसरी भाषाओं में लिखे जा रहे बाल साहित्य के अच्छे तत्त्वों को भी ग्रहण करना चाहिए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. जसवीर भुल्लर ने की, जिसमें डॉ. सरबजीत बेदी और श्रीमती जसकंवलजीत कौर ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. दर्शन बुट्टर ने की, जिसमें डॉ. दर्शन सिंह आशट, श्री मनमोहन सिंह दौन, श्री कमलजीत नीलों और श्री तरसेम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्वानों और प्रतिभागियों ने शिरकत की।

'बहुआयामी संदर्भों में तमिऴ कविता' पर परिसंवाद

11 अक्तूबर 2014, विल्लुपुरम्

साहित्य अकादेमी ने दैवनैअमाल कॉलेज, विल्लुपुरम के साथ मिलकर 5 अक्तूबर 2014 को कॉलेज सभागार में 'बहुआयामी संदर्भों में तमिऴ कविता' पर एक परिसंवाद आयोजित किया।

साहित्य अकादेमी, चैन्नै कार्यालय के प्रभारी श्री ए. एस. इलानगोवन ने आगत प्रतिभागियों अतिथियों विद्वानों, फैकल्टी और छात्रों का स्वागत करते हुए तमिऴ कविताओं में उपलब्ध बहुआयामी संदर्भों पर संक्षेप में प्रकाश डाला और भारत की अन्य भाषाओं में लिखी जा रही कविताओं से तमिऴ कविताओं के तुलनात्मक अध्ययन पर विश्लेषण प्रस्तुत किया। प्रो. के. नाचिमुथु ने अकादेमी द्वारा की जा रही पहलक़दमियों, कार्यक्रमों पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए इसके लाभ से सभी को अवगत कराया। उन्होंने अकादेमी की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में भी श्रोताओं और दर्शकों को सूचित किया। आईपीएस श्री टी. राधाकृष्णन ने अपने भाषण में प्राचीन

संगम कविताओं की 20 वीं शताब्दी में लिखी गई तमिऴ कविताओं से तुलना की, साथ ही उन्होंने अंग्रेज़ी कविताओं से भी तमिऴ कविताओं की तुलना करते हुए उस पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया।

कॉलेज के श्री ई. सामीकन्नु, श्री एस. सेंथिल कुमार और डॉ. कस्तूरी भाई धनसेकरन ने अकादेमी की पहलक़दमियों की प्रशंसा की और इस तरह के परिसंवाद आयोजित करने के लिए अकादेमी को धन्यवाद भी दिया। वहीं डॉ. आर. संबथ ने तमिऴ कविताओं के बहुआयामी संदर्भों में संक्षेप में व्याख्या करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. मुहिलै राजपांडियन ने की, जिसमें डॉ. पोरकलै, श्री के. गणेशन और श्रीमती प्रेमलता ने आधुनिक कविताओं में नारीवादी दृष्टि, 20 वीं शताब्दी की तमिऴ कविताओं में कवि परंपरा और उसमें उत्तर आधुनिकता की खोज करते हुए अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री पझामलै ने की, जिसमें श्रीमती सरोज बाबू, श्री सुंदर मुरुगन और श्री चेल्ल पेरुमल ने अपना-अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए दलितों-वंचितों के संदर्भ में समकालीन सामाजिक यथार्थ पर प्रकाश डाला। समापन भाषण देते हुए प्रो. रामा गुरुनाथन ने परिसंवाद में उभरे विभिन्न मुद्दों पर संक्षेप में अपनी बातें रखीं, जबकि डॉ. मँगैयरकारसी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'समकालीन तेलुगु कहानी' पर परिसंवाद
12 अक्तूबर 2014, नेल्लोर

साहित्य अकादेमी ने नेल्लोर जिला रचायतल्ला संगम, नेल्लोर के साथ मिलकर 12 अक्तूबर 2014 को नेल्लोर के विक्रम सिंह पुरी सभाकक्ष में 'समकालीन तेलुगु कहानी' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी. राधाकृष्णन ने आगत प्रतिभागियों लेखकों और विद्वानों का स्वागत करते हुए इस तरह के परिसंवादों के उद्देश्य पर संक्षेप में प्रकाश डाला। प्रो. एन. गोपी ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए बताया कि किसी भी समाज में बदलाव का दर्पण होती हैं कहानियाँ। इसीलिए यह अनिवार्य है कि समाज की जैसी प्रकृति होगी, वैसी ही कहानी की भी प्रकृति होगी। उन्होंने बताया कि भूमंडलीकरण ने देश और समाज में सकारात्मकता की बजाय नकारात्मकता ही ज़्यादा पैदा की है; यही कारण है कि उसकी प्रतिच्छाया कहानियों पर भी पड़ रही है। प्रसिद्ध लेखक श्री बिहारी ने बीज भाषण देते हुए 2009 से 2014 के बीच लिखी कहानियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। वे अध्यक्ष प्रो. गोपी के अधिकांश विचारों से सहमत दिखे कि भूमंडलीकरण ने हाशिए पर खड़े लोगों पर बुरा प्रभाव डाला है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. पैल्लाकुरू जयाप्रदा ने की, जिसमें श्रीमती इंदिरागंती जानकी बाला, श्री राजा राज मोहन राव, श्री वेन्नलाकांति राजेश्वर प्रसाद और श्रीमती चंद्रलता ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं ने तेलुगु की आधुनिक कहानियों के मुख्य विषय भूमंडलीकरण का असर और शहरी जीवन की समस्याएँ, कहानी कहने की शैली में बदलाव, फ़िल्मों के बढ़ते प्रभाव से कहानियों से विलुप्त होती सृजनात्मकता पर समान रूप से चर्चाएँ कीं। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री राजा राज मोहन राव ने की, जिसमें श्री मधुरंताकम नरेन्द्र, आर.एम. उमा महेश्वर राव और श्रीमती मुक्तेवी भारती ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन सभी वक्ताओं ने तेलुगु कहानियों में भूमंडलीकरण की प्रतिच्छाया, समकालीन तेलुगु कहानियों कथावस्तु में विविधता जैसे विषयों पर मुख्य रूप से प्रकाश डाला। समापन सत्र की अध्यक्षता श्रीमती पथुरी अन्नपूर्णा ने की और मानव जीवन और कहानियों के अंतर्संबंध पर प्रकाश डाला। उन्होंने मानव जीवन को भी एक कहानी बताया। प्रो. एन. गोपी ने वर्तमान में लिखी जा रही तेलुगु कहानियों के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला और संक्षेप में तेलंगाना समाज और उसकी कहानियों

पर बात की। *चिंकू* के संपादक श्री नंदुरी राजा गोपाल ने समापन भाषण देते हुए दिन भर की चर्चाओं पर संक्षेप में प्रकाश डाला और परिसंवाद की सराहना की। अंत में श्री मतेही रतन प्रसाद ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

भारतीदासन की 125वीं जयंती पर परिसंवाद

16 अक्तूबर 2014, पोलची

साहित्य अकादेमी ने पोलची के एनजीएम कॉलेज के तमिऴ अध्ययन विभाग के साथ मिलकर 16 अक्तूबर 2014 को पोलची के एनजीएम कॉलेज में ही भारतीदासन की 125 वीं जयंती पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी चैन्नै के कार्यक्रम अधिकारी श्री ए.एस. इलानगोवन ने आगत प्रतिभागियों विद्वानों, फैकल्टी और कॉलेज के छात्रों का स्वागत करते हुए भारती और भारतीदासन की प्रासंगिकता और महत्ता पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य को बढ़ावा देने हेतु ली गई कई पहलक़दमियों का संक्षेप में ज़िक्र किया। उन्होंने इस अवसर पर भारतीदासन की साहित्यिक उपलब्धियों का भी मूल्यांकन किया। एनजीएम कॉलेज के अध्यक्ष डॉ. कृष्णराज वानावारयर इस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। सुप्रसिद्ध कवि डॉ. सिर्पी बालासुब्रमणियन ने भारतीदासन की कविताओं का विश्लेषण करते हुए उनके जीवन से जुड़े अनेक दिलचस्प दृष्टांतों को साझा किया। सत्र के दौरान भारतीदासन के सुपुत्र मन्नार मन्नन तथा पौत्रों श्री भारती एवं सेलवम का अभिनन्दन किया गया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. संबथ ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए भारतीदासन द्वारा स्वस्थ साहित्यिक वातावरण निर्मित करने का ज़िक्र किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री आर. सुंदर मुरूगन ने की, जिसमें साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. कामराज, श्री वाई मणिकंदन और श्रीमती यज्ञ चंद्रा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन वक्ताओं ने भारतीदासन की कविताओं में अभिव्यक्त राष्ट्रवाद, मानववाद, नारीवाद जैसे तत्त्वों की खोज की। द्वितीय सत्र प्रसिद्ध लेखक और अनुवादक श्री पूवीयारसु की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री सेतुपति और श्री गोवथमन ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए भारतीदासन की कविताओं में अभिव्यक्त प्रकृति दर्शन पर चर्चा की तथा भारती और भारतीदासन का एक तुलानात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। श्री इरोड तमिळनबन ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए भारतीदासन की तुलना रोमांटिक कवि शेली और बायरन से की। कार्यक्रम का समापन भाषण डॉ. के. चेल्लपन ने दिया, कॉलेज के प्राचार्य प्रो. बद्री नारायण ने स्वागत भाषण दिया, जबकि श्री पी.एम. पालनीसामी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'पंजाबी रंगमंच के 100 वर्ष' पर संगोष्ठी

16-17 अक्तूबर 2014, पटियाला

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के थिएटर एवं टेलीविजन विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में पंजाबी रंगमंच की शतवार्षिकी के अवसर पर 16-17 अक्तूबर 2014 को एक संगोष्ठी का आयोजन पटियाला में किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए पंजाबी रंगमंच के गत सौ वर्षों की चुनौतियों एवं भविष्य के विकास की संभावनाओं का उल्लेख किया।

पंजाबी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जसपाल सिंह ने अपने वक्तव्य में रंगमंच के रचनात्मक माध्यम के बारे में बात करते हुए पंजाबी रंगमंच के पुरोधा नोराह रिचर्ड्स

के नाम से हर वर्ष एक थिएटर कलाकार को फ़ेलोशिप देने की घोषणा की। पजांबी परामर्श मडंल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने संगोष्ठी के उद्देश्य एवं उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. मोहिंदर कुमार ने अपने बीज वक्तव्य में पंजाबी रंगमंच के दिग्गज कलाकारों के योगदान को याद करते हुए इस सदर्भ में साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया कि अकादेमी ने समय से इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अजमेर सिंह औलख ने की, जिसमें रंगमंच के पाँच विशेषज्ञों नवनिद्र बहल, कमलेश उप्पल, गुरचरण सिंह चन्नी, जसपाल देओल एवं प्रीतम सिंह रुपल द्वारा पंजाबी रंगमंच के विभिन्न पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किए गए। शाम को विभाग के छात्रों द्वारा एक नाटक प्रस्तुत किया गया। दूसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता श्री कमलेश उत्पल ने की, जिसमें रवि शर्मा, नवदीप कौर, मुकेश गौतम, मनपाल टिवाणा, अमरीक गिल एवं सुनीता धीर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री दीपक मनमोहन सिंह ने की। इस सत्र में जसपाल कौर देओल, जसपाल सिंह एवं अमरीक गिल ने अपने विचार व्यक्त किए। साहित्य अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मनजीत कौर भाटिया ने आभार व्यक्त किया।

'एच.वी. सवितारम्मा : जीवन एवं लेखन' विषयक परिसंवाद

18 अक्तूबर 2014, बेंगळूरु

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने 'एच.वी. सवितारम्मा : जीवन एवं लेखन' विषय पर 18 अक्तूबर 2014 को कृष्णराज परिशनमंदिर, बेंगळूरु में एक परिसंवाद का आयोजन किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु में कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में कन्नड की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका डॉ. सी. सर्वमंगला ने कहा कि सवितारम्मा कन्नड में महिलाओं के साहित्य के कोडगिन गौरम्मा के साथ अग्रदूत के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने टैगोर, चेखव एवं अन्य महान् लेखकों की कृतियों के अनुवाद का भी बीड़ा उठाया।

कन्नड परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती पी. चंद्रिका ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि सवितारम्मा की विभाजन की कहानियाँ उस समय की दूसरी भाषाओं में लिखित कहानियों से किस प्रकार भिन्न हैं और वह एक विशिष्ट और मौलिक विचारक थीं। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रमण्यम ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में सवितारम्मा के लेखन और विचारों की विशिष्टताओं की बात की। उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा लगता है कि उनकी सादगी, सरलता तथा दार्शनिक जटिलताओं का अभाव ही उनकी लेखन शक्ति थी। सत्रांत में कर्नाटक लेखकियार संघ की अध्यक्ष श्रीमती वसुंधरा भूपति ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बी.एन. सुमित्रा शर्मा ने प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता करते हुए एच.वी. सवितारम्मा के लेखन की विकास यात्रा की चर्चा की। दो प्रतिष्ठित विद्वान श्रीमती विनय वक्कुंडा एवं श्रीमती सी.डी. मंजुला ने सवितारम्मा के जीवन एवं लेखन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्रीमती आर. पूर्णिमा ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा श्रीमती प्रीति शुभ चंद्रा, सबीहा भूमिगौडा एवं श्रीमती के. शरीफा ने क्रमशः 'सवितारम्मा द्वारा अनूदित उपन्यासः राष्ट्रीयता एवं आधुनिकता का प्रश्न', 'सवितारम्मा द्वारा परिवार एवं समाज का चित्रण', एवं 'सवितारम्मा : एक रचनात्मक प्रतिक्रिया' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रसिद्ध कन्नड लेखिका श्रीमती विजया ने अपने समापन वक्तव्य में सवितारम्मा के लेखन में विविधता के बारे में बात की। श्रीमती वसुंधरा भूपति ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

डोगरी लेखक शिवनाथ पर केंद्रित परिसंवाद
19 अक्तूबर 2014, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 अक्तूबर 2014 को जम्मू में डोगरी लेखक शिवनाथ पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री शांतनु गंगोपाध्याय ने उद्घाटन सत्र में आए श्रोताओं और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए दिवंगत शिवनाथ की साहित्यिक विरासत पर संक्षेप में प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने अपना उद्घाटन भाषण देते हुए डोगरी साहित्य में शिवनाथ के महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिवनाथ द्वारा डोगरी साहित्य के उत्थान हेतु लिखी गई रचनाओं को भविष्य के शोधार्थियों और विद्वानों के लिए उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि शिवनाथ के निजी आलेख और संस्मरण काफी लोकप्रिय हैं, जो न सिर्फ डोगरीभाषियों के लिए, बल्कि अन्य भाषा-भाषियों के लिए भी अमूल्य निधि हैं। प्रो. नीलाम्बर देव शर्मा और नरसिंह देव जम्वाल की अध्यक्षता में संपन्न विचार सत्रों में प्रो. वीणा गुप्ता, डॉ. ओम गोस्वामी, डॉ. वंशी लाल और डॉ. निर्मल विनोद जैसे विद्वानों ने शिवनाथ के जीवन और उनकी लेखनी के विभिन्न पक्षों पर अपना-अपना आलेख प्रस्तुत किया।

प्रसन्नाकवि संकरामबदी सुंदराचारी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
20 अक्तूबर 2014, तिरुपति

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा तेलुगु भाषोद्यम समिति के सहयोग से प्रसन्नाकवि संकरामबदी सुंदराचारी की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन 20 अक्तूबर 2014 को पद्मावती महिला पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, तिरुपति में किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए भारतीय भाषाओं में साहित्य के विकास के लिए अकादेमी द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में विस्तार से चर्चा की। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने बताया कि कवि सुंदराचारी द्वारा रचित राजकीय गान संपूर्ण राज्य में गत चालीस वर्षों से प्रसिद्ध हैं, किंतु उन्हें मान्यता 1975 में मिली। एस.वी. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डब्लू. राजेंद्र ने आशा व्यक्त की कि प्रसिद्ध कवि की कविताएँ एवं लेखन हम तेलुगु भाषियों को, जो कि विभाजन के कगार पर हैं, एकजुट करने के लिए प्रेरित करेंगी। मृत्युपर्यंत कवि की देखभाल करनेवाले विशिष्ट अतिथि श्री मानव भास्कर नायडु ने उनसे जुड़े दिलचस्प संस्मरण सुनाए। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. आर. चंद्रशेखर रेड्डी ने सुंदराचारी की कविताओं की सहजता के बारे में बात की। आकाशवाणी के डॉ. एन. वेणुगोपाल ने लोगों से सुंदराचारी की समग्र रचनाओं को प्रकाशित करने का आह्वान किया, ताकि उनकी दुर्लभ रचनाओं को नई पीढ़ी तक बिना नुकसान हुए हस्तांतरित किया जा सके। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. ज्ञानकुमारी ने कॉलेज परिसर में इस आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता आरासम के अध्यक्ष श्री कोटा पुरुषोत्तम ने की, जबकि प्रो. एम. नरेंद्र एवं प्रो. एम. संपत कुमार ने क्रमशः गीतांजलि एवं बुद्धगीता कविता के सौंदर्य तत्त्व पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. जी. बालसुब्रह्मण्य ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा 'सुंदर शुद्ध बिन्दुवुलू' पर आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में तीन विद्वानों डॉ. श्रीमान नारायण, डॉ. एम. मल्लिकार्जुन रेड्डी एवं श्री ए. मुरली ने क्रमशः 'सुंदरभारतम', 'सुंदर संग्रह रामायणम' एवं 'सुंदराचारी के थेटागीत' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. मधुज्योति ने की तथा दो आलेख सुश्री

जी. श्रीदेवी द्वारा 'ना स्वामी' विषय पर तथा 'सुंदराचारी की संवेदना' विषय पर मधु ज्योति ने आलेख प्रस्तुत किए। श्री सकमनागराज ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए चित्तूर जिले में तेलुगु भाषा आंदोलन को व्यापक तौर पर संदर्भित किया। परिसंवाद का समापन वक्तव्य डॉ. आर.ए. पद्मनाभ राव द्वारा प्रस्तुत किया गया।

ख़्वाजा अहमद अब्बास जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

24 अक्तूबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा ख़्वाजा अहमद अब्बास जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन 24 अक्तूबर 2014 को अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए ख़्वाजा अहमद अब्बास का उर्दू साहित्य की विभिन्न विधाओं में योगदान का उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि ख़्वाजा अहमद अब्बास बहुमुखी विद्वान थे, लेखक, पत्रकार एवं फ़िल्म स्क्रिप्ट लेखक थे। हमें उनके लेखन को संरक्षित करने के लिए सभी प्रयास करने चाहिएँ क्योंकि वे धर्मनिरपेक्षता की बानगी थे। हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सैयद एहतिशाम हसनैन इस परिसंवाद के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि ख़्वाजा अहमद अब्बास एक दूरदर्शी समाजवादी, लेखक विशेष एवं धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध एक पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। इस अवसर पर श्री ख़ालिद अशरफ़ द्वारा ख़्वाजा अहमद पर लिखित तथा अकादेमी द्वारा प्रकाशित एक विनिबंध का भी लोकार्पण किया गया।

विचार सत्र में ज़ोया ज़ैदी, मुशर्रफ़ आलम जधैक़ी, ख़ालिद अशरफ़, सुरेश कोहली एवं सुहेल अंजुम द्वारा क्रमशः ख़्वाजा अहमद अब्बास की कहानियाँ, ख़्वाजा अहमद अब्बास का कथालेखन, अब्बास का जीवन एवं कृतित्व, अब्बास का फ़िल्म लेखन एवं अब्बास की पत्रकारिता विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए गए।

उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक चंद्रभान ख़याल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया तथा अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ सदफ़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

'राष्ट्रवाद की अवधारणा' विषयक परिसंवाद

26 अक्तूबर 2014, चित्रदुर्ग

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा अभिरुचि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक फ़ोरम, चित्रदुर्ग के सहयोग से 'राष्ट्रवाद की अवधारणा' विषय पर 26 अक्तूबर 2014 को चित्रदुर्ग में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु के श्री एल. सुरेश कुमार द्वारा प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया गया। कन्नड भाषा के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. के. मारुलसिडप्पा द्वारा परिसंवाद का उद्घाटन किया गया। उन्होंने अपने उद्घाटन वक्तव्य में राष्ट्रवाद के विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि गाँधी के ग्राम स्वराज दर्शन या नेहरू के गाँव द्वारा राष्ट्र निर्माण की दृष्टि या टैगोर या गोखले का दर्शन—ये सभी राष्ट्रवाद की अवधारणा हैं।

कन्नड भाषा के प्रसिद्ध लेखक श्री वीरेंद्र कुमार ने अपने आरंभिक वक्तव्य में स्थानीय जड़ों में राष्ट्रवाद का विकास एवं उसके प्रभाव के बारे में बात की। डॉ. राजेंद्र चेन्नी ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि राष्ट्र की अवधारणा शासक के ख़िलाफ़ रोष के अनुरूप तेज़ी से किस प्रकार पहुँची और कैसे राष्ट्रवाद की वर्तमान अवधारणा आधुनिकता का घटक है।

अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रवाद की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में बात की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजाराम हेगड़े ने की तथा डॉ. टी. अविनाश एवं डॉ. वागीश्वरी ने क्रमशः 'राष्ट्रवाद के बहुआयामी पक्ष' एवं 'राष्ट्रवाद तथा लिंग संबंधी विचार' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. सिराज अहमद और डॉ. मेती मल्लिकार्जुन ने अपने विश्लेषण प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. चंद्रशेखर तलवार ने की तथा श्रीमती तारिणी शुभदायिनी एवं रहमत तारिकेरे ने क्रमशः 'राष्ट्रवाद–समस्याएँ और आगे की चुनौतियाँ' तथा 'राष्ट्रवाद की अवधारणा एवं धार्मिक आस्था' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. महेश हरवे तथा डॉ. एरेन्ना ने पढ़े गए आलेखों पर विश्लेषण प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता अभिरुचि फोरम के डॉ. दोड्डमलय्या ने की। डॉ. बंजागेरे जयप्रकाश ने अपने समापन वक्तव्य में भाषा, राज्य एवं राष्ट्र के संदर्भ में राष्ट्रवाद के बारे में अपने विचार प्रकट किए।

'मानववाद : एक निरीक्षण' विषयक परिसंवाद

27 अक्तूबर 2014, नगाँव

साहित्य अकादेमी और नगेन सइकीया सारस्वत ट्रस्ट बोर्ड और महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में 27 अक्तूबर 2014 को 'मानववाद : एक निरीक्षण' विषय पर असम के नगाँव में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. सत्यकाम बरठाकुर ने आगत अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए परिसंवाद के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और इस तरह का महत्त्वपूर्ण परिसंवाद आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव विवि के कुलपति प्रो. के.के. डेका ने परिसंवाद आयोजित करने के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया और बताया कि दुनिया के किसी भी सिद्धांत और विषय के लिए मानववाद सदैव प्रासंगिक होता है। उन्होंने शंकरदेव के विषय में भी कहा कि वे स्वयं एक महान् मानववादी थे। उन्होंने कहा कि मानववाद एक आधुनिक विचार और अवधारणा है, यद्यपि इसके बावजूद शंकर देव, चंडीदास और उनके बाद के रोमांटिक कवियों ने मानवबाद पर कविताएँ लिखीं। अपने बीज भाषण में प्रो. मदन शर्मा ने मानववाद से संदर्भित अनेक मुद्दों और मानववादी परंपरा पर प्रकाश डालते हुए मानववाद के हालिया विकास 'उत्तर मानववाद' और 'मानववाद से परे' जैसी अवधारणाओं पर चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने बताया कि किस तरह रोमांटिक काल के दौरान आम लोग साहित्य का विषय बनते हैं। उन्होंने इस संदर्भ में शंकरदेव और

उद्घाटन सत्र में व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. सत्यकाम बरठाकुर

लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ द्वारा लिखित मानववादी साहित्य के उदाहरण दिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रदीप सइकीया ने की, जिसमें प्रो. गिरीश बरूआ, प्रो. अरिंदम बरकतकी और प्रो. प्रदीप सइकीया जैसे-विद्वानों ने 'आदर्शवाद एवं मानववाद' और 'साहित्य और मानववाद' जैसे विषयों पर अपने विचार रखे। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. दयानंद पाठक ने की, जिसमें प्रो. दिनेश च. गोस्वामी, श्री प्रभात बोरा और श्री रातुल च. बोरा ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए 'विज्ञान प्रौद्योगिकी और मानववाद', 'उदार मानववाद' और 'शंकरदेव और मानववाद' जैसे विषयों पर अपनी बातें रखी। समापन सत्र में प्रो. महेंद्र अहोम और प्रो. नगेन सइकीया ने इतिहास और मानववाद के अनेक पहुलओं पर चर्चा की। कार्यक्रम के अंत में प्रो. भास्कर ज्योति शर्मा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'मिलरेपा : महान योगी और कवि'

27 अक्तूबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने इंटरनेशनल बुद्धिस्ट कनफेडरेशन के सहयोग से दिनांक 27 अक्तूबर 2014 को नई दिल्ली में तिब्बत के महान योगी और कवि मिलरेपा के गीतों पर चर्चा के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में सम्मानित अतिथि के तौर पर 17 वें ग्यालवांग कर्मपा ओज्येन त्रिनले दोरजी पधारे थे। दोरजी ने मिलरेपा के जीवन और गीतों को वैश्विक रूप से प्रासंगिक बताया।

दिनभर चली इस संगोष्ठी की अध्यक्षता हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री केदारनाथ सिंह और प्रोफेसर वरयाम सिंह ने की। संगोष्ठी में मशहूर बौद्ध विद्वान डॉ. ताशी पलजोर; कवि, कहानीकार, संपादक और आलोचक तुलसी रमण और बनारस से आए असिस्टेंट प्रोफेसर श्रीमती नीरज धनकर और डॉ. सत्या ने शिरकत की।

डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य पर परिसंवाद

28 अक्तूबर 2014, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी ने दिनांक 28 अक्तूबर 2014 को गुवाहाटी के विवेकानंद केंद्र में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य के जीवन और कृतित्व पर एक परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने सत्र की अध्यक्षता की। उद्घाटन भाषण डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने तथा बीज भाषण प्रो. नगेन सइकीया ने दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में सत्र के दौरान श्री शैलेन भराली और श्रीमती विनीता भट्टाचार्य उपस्थित थे।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने की, जिसमें श्री विमल मजुमदार, श्री दीपाली भट्टाचार्य बरुआ और श्री जयंत कुमार बोरा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने 'वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य के

बाएँ से दाएँ : नलिनीधर भट्टाचार्य, सैलेन भराली, नगेन सइकीया, लक्ष्मीनंदन बोरा, करबी डेका हज़ारिका, वनिता भट्टाचार्य तथा मलय खोंद

उपन्यास', 'वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य के लेखन में मानववाद' और 'वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य की कहानियाँ' जैसे विषयों पर चर्चा की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. दीप्ति फूकन पातगिरि ने की जिसमें श्रीमती लुत्फ़ा हानुम सलीमा बेगम, श्रीमती नमिता डेका और श्री सत्यकाम बरठाकुर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सभी वक्ताओं ने 'वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य की कविताएँ, 'एक संपादक के रूप में वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य' और 'वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य के गीत' जैसे विषयों पर अपनी बातें रखी। समापन भाषण श्री मलय खोंद ने दिया और समापन सत्र की अध्यक्षता श्री नवीन बरूआ ने की।

महाविद्वान मीनाक्षी सुंदरम् पिल्लै पर परिसंवाद

29 अक्तूबर 2014, तिरुवारूर

साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय ने तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय के साथ मिलकर 29 अक्तूबर 2014 को तिरुवारूर में महाविद्वान मीनाक्षी सुंदरम् पिल्लै की 200वीं जयंती मनाई।

चेन्नै कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलानगोवन ने स्वागत भाषण देते हुए आगत प्रतिभागियों विद्वानों, फैकल्टी और विवि के छात्रों का स्वागत किया और महाविद्वान की लेखनी की महत्ता पर संक्षेप में प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के नाचिमुथु ने साहित्य अकादेमी द्वारा देशभर में साहित्य और साहित्यिक परंपरा के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए की जा रही पहलक़दमियों का उल्लेख किया और आशा व्यक्त की कि अकादेमी और तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयुटीएन) भविष्य में भी इस तरह के परिसंवाद और संगोष्ठियाँ आयोजित करते रहेंगे। विवि के कुलपति डॉ. सेनाथिर ने साहित्य की समृद्धि हेतु अकादेमी द्वारा विशेषकर अनुवाद और बाल साहित्य के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने साहित्य अकादेमी को इस तरह की संगोष्ठियों और बैठक का आयोजन करने के लिए हर प्रकार के समर्थन और उचित सहयोग देने का आश्वासन दिया। सत्य ज्ञान महादेव देसिका परमाचार्य अडिगलर ने विद्वतापूर्ण भाषण देते हुए युवाओं के भविष्य को बेहतर बनाने के विचार से साहित्य और धर्म की भूमिका पर प्रकाश डाला। सत्रांत में श्री के. जवाहर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. वाई मणिकंदन ने की, जिसमें डॉ. आर. संबथ, श्री कोवई मणि और श्री कुंजीथापथम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनमें महाविद्वान की कला और कविता, महाविद्वान के समकालीन साहित्य और महाविद्वान के लघु महाकाव्यों पर समान रूप से प्रकाश डाला गया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री बी. आर. माधवन ने की, जिसमें श्री सोलै सुंदर पेरुमल और श्री सतीश ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनमें चोल राज्य का वर्णन और शिरकाजी कोवई पर समान रूप से चर्चा हुई। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. कामराज ने समापन सत्र की अध्यक्षता की, जबकि श्री पी. वेलमुरुगन ने आयोजन में भाग लेने

ए.एस. इलानगोवन, के. नाचिमुथु, एस.जी.एम. परमाचार्य तथा टी. सेनाथिर

वाले सभी व्यक्तियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध विद्वान श्री टी. एन. रामचंद्रन ने विचारपूर्ण समापन भाषण दिया, श्री वी. राजशेकरन ने अभिनंदन भाषण दिया। कार्यक्रम के अंत में श्री पी. कुमार ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

भारत और रूस पर परिसंवाद : साहित्यिक आदान-प्रदान और प्रभाव

30 अक्तूबर 2014, मॉस्को

साहित्य अकादेमी के लेखक प्रतिनिधिमंडल ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत रूस की यात्रा की। इस अवसर पर भारतीय दूतावास ने मॉस्को में एक परिसंवाद आयोजित करने की व्यवस्था की। परिसंवाद का विषय था, 'भारत और रूस के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान और प्रभाव'। लेखकों के प्रतिनिधि मंडल का भारत-रूस और अफ्रीकी भाषाओं की प्रमुख डॉ. इलीना ग्लाडकोवा ने गर्मजोशी से स्वागत किया। परिसंवाद में फैकल्टी के सदस्य डॉ. क्लारा डूकयोवा, डॉ. अलेक्जेंडर सिगोर्सकी, डॉ. मरिना अलेक्जेंड्रोवा और डॉ. युलिना गोलुबकीना ने सहभागिता की। डॉ. ग्लाडकोवा ने दोनों देशों के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान हेतु इस तरह के परिसंवाद को सार्थक बताया और भारत के लेखकों और विद्वानों से आह्वान किया कि वे अपने साहित्य में ऐसे नए आयाम जोड़ें, जिससे कि छात्रों को दोनों देशों की संस्कृति और साहित्य को समझने में मदद मिल सके। डॉ. ग्लाडकोवा को सुनने के बाद साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने बताया कि यह यात्रा आज से एक साल पहले ही अकादेमी और रूस स्थित भारतीय दूतावास के बीच तय कर ली गई थी। उन्होंने भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक संबंध स्थापित करने पर ज़ोर दिया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने भारत और रूस के बीच सदियों से चले आ रहे इस प्रकार के सांस्कृतिक सहयोग और आदान-प्रदान को रेखांकित किया और कहा कि भारत

मॉस्को में अकादेमी का प्रतिनिधिमंडल

के स्वतंत्र होने के बाद तो यह संबंध और अधिक मजबूत हुआ है। उन्होंने इस अवसर पर भारत के बहुभाषी प्रकृति होने का भी हवाला दिया। प्रो. वरयाम सिंह जो भारत और रूसी अध्ययन के प्रमुख हस्ताक्षर रहे हैं, ने रूसी में अपनी बात रखते हुए अतीत में भारत और रूस के बीच इस तरह के सहयोग पर प्रकाश डाला और कहा कि भारत के अधिकांश साहित्य और दलित साहित्य का अनुवाद रूसी भाषा में हुआ है। उन्होंने इस संदर्भ में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के अपने अनुभवों से सभी को अवगत कराया, जहाँ वे रूसी अध्ययन विभाग का हिस्सा रहे थे। यहाँ यह उल्ल्खेनीय है कि रूसी विद्वानों के लिए संस्कृत का अध्ययन रूस में 18वीं शताब्दी से ही आकर्षण का केंद्र बिंदु रहा है। कालिदास का साहित्य, रामायण, महाभारत और गीता का अनुवाद रूसी भाषा में हो चुका है। संस्कृत विद्वान राधावल्लभ त्रिपाठी ने अगले वक्ता के रूप में बोलते हुए इस प्रकार के साहित्यिक आदान-प्रदान और प्रभाव की महत्ता पर प्रकाश डाला। सबसे पहले मास्को विश्वविद्यालय में 1851 में संस्कृत पीठ की स्थापना की गई और उसके बाद 1855 में सेंट पीटर्सबर्ग में भी संस्कृत पीठ की स्थापना की गई। प्रो. त्रिपाठी ने संस्कृत के विकास और अध्ययन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु रूस के अनेक विद्वानों के बारे में चर्चा की और उनसे अपने संबंधों के बारे में भी बात की। अगले वक्ता के रूप में बोलते हुए ओड़िया कवयित्री डॉ. पारमिता सत्पथी ने रूसी भाषा और संस्कृति से जुड़े बचपन के अपने संस्मरणों को साझा किया। उन्होंने रूसी भाषा के अनेक लेखकों जैसे टॉल्स्टाय और गोर्की के साहित्य की आम आदमी तक पहुँच को आसान बताया। उन्होंने रवींद्रनाथ ठाकुर के रूस से लिखे पत्रों और महात्मा गाँधी और लियो टॉल्स्टाय के बीच हुए पत्र व्यवहार पर प्रकाश डाला और बताया कि किस तरह वे भारत में आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे लोगों की समस्याओं को समझते थे। डॉ. सत्पथी ने राजकपूर और बॉलीवुड की फ़िल्मों का रूस पर हुए प्रभाव का भी उल्लेख किया। डॉ. विक्रम संपथ ने अपने निजी अनुभव बताए जो रूसी और अंग्रेज़ी के लेखकों और इतिहासकारों से संबंधित हैं। डॉ. विक्रम संपथ ने इस संदर्भ में उन दो नामों का उल्लेख किया, जिन्होंने रूसी सभ्यता को समझने के लिए उनकी समझ को एक आकार दिया। ये हैं प्रसिद्ध पेंटर स्वेतोस्लाव रौरिक और कत्थक जानकार डॉ. माया राव। उन्होंने अंग्रेज़ी में भारतीय साहित्य का भी हवाला दिया, जिसे वे भारतीय परंपरा के नाम से नापसंद करते हैं। लंबे समय से पीआईसी के काउंसलर श्री राहुल श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। यात्रा के दौरान साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने रूसी प्रकाशकों के साथ आधुनिक भारत की कालजयी कृतियों के रूसी भाषा में अनुवाद हेतु व्यापक बातचीत की, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' के अंतर्गत संपन्न होना है।

वट्टिकोटा अलवरु स्वामी की जन्मशती परिसंवाद

30 अक्तूबर 2014, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी ने 30 अक्तूबर 2014 को हैदराबाद के आंध्र सारस्वत परिषद् सभागार में प्रसिद्ध तेलंगाना लेखक वट्टिकोटा अलवरु स्वामी की 100 वीं जयंती पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिभागियों और विद्वानों का स्वागत किया। उन्होंने इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा की गई अनेक पहलक़दमियों की चर्चा की और वट्टिकोटा अलवरु स्वामी के जीवन और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए आंध्र ज्योति के श्री के.

श्रीनिवास ने अलवरु स्वामी के लेखन के सामाजिक और साहित्यिक पहलुओं को आधुनिक युग में समझने की आवश्यकता पर बल दिया। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अमंगी वेणुगोपाल ने अपना बीज भाषण देते हुए अलवरु स्वामी के जीवन के कई अनुछए पहलुओं से अवगत कराया। कार्यक्रम में किंवदंती बन चुके लेखक वट्टिकोटा अलवरु स्वामी के सुपुत्र श्री वट्टिकोटा श्रीनिवासुलु विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. बाला श्रीनिवास मूर्ति ने धन्यवाद ज्ञापन किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. एस.वी. सत्यनारायण ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। उस सत्र में श्री सुनकी रेड्डी, श्री नारायण रेड्डी, श्री वेणु एनकोजू, श्री संगीशेट्टी श्रीनिवास और डॉ. जी बाल श्रीनिवासमूर्ति ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए अलवरु स्वामी के जीवन और साहित्य के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्रीमती मुदीगंती सुजाता रेड्डी ने की, जिसमें श्री बी.एस. रामुलु, श्री रापोलु सुदर्शन, श्री येंदुलरी सुधाकर, श्री कासुला प्रताप रेड्डी और श्री एस. रघु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध लेखक डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने उन दिनों को याद किया, जब वे अलवरु स्वामी से जुड़े हुए थे और उनके जीवन के अनेक दृष्टांतों का उल्लेख किया। सत्र में साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती सी. मृणालिनी और श्रीमती नंदिनी सिद्ध रेड्डी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

'संवैधानिक नैतिकता एवं स्वातंत्र्योत्तर तेलुगु साहित्य' विषयक संगोष्ठी

1-2 नवंबर 2014, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा अस्मिता रिसोंस सेंटर फॉर वीमेन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'संवैधानिक नैतिकता एवं स्वातंत्र्योत्तर तेलुगु साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 1-2 नवंबर 2014 को पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, नामपल्ली, हैदराबाद में किया गया।

उद्घाटन सत्र में श्री के.पी. राधाकृष्णन, कार्यक्रम अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिभागियों का परिचय दिया तथा संगोष्ठी की विषयवस्तु के बारे में बताया। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की सदस्या सुश्री वोल्गा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में संविधान एवं साहित्य के बीच संबंध के आयाम का उल्लेख किया। सामाजिक विकास परिषद् की निदेशक डॉ. कल्पना कन्नबिरन ने अपने बीज वक्तव्य में आंबेडकर की घोषणा को याद करते हुए कहा कि संवैधानिक नैतिकता स्वाभाविक संवेदना नहीं है, किंतु ऐसा कुछ है, जिसे विकसित किया जा सकता है। उन्होंने संवैधानिक नैतिकता को समाज से अपेक्षाकृत अधिक अलग करते हुए आगे कहा कि संवैधानिक नैतिकता कोई क़ानून नहीं है, बल्कि मूल्यों का वर्णन है। उन्होंने वैज्ञानिक सम्मिश्रण के विकास पर भी बल दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री वोल्गा ने की, जिसमें डॉ. कात्यायनी विद्महे, डॉ. सम्मेता नागमल्लेश्वर राव, डॉ. सीताराम, डॉ. मेदिपल्ली रविकुमार और डॉ. ए. श्रीनिवास ने क्रमशः अल्लम रजय्या की कहानियों में नैतिकता, वासि रेड्डी सीता देवी के उपन्यास *मत्तिमनीषी* में उपलब्ध संवैधानिक असमानताएँ, डॉ. के. शिवा रेड्डी की कविताओं में नैतिक मूल्यों की प्रस्तुति, चिलुकुरी देवपुत्र के *पंचमम* में जातिगत धर्मसत्ता और नैतिक दुविधाओं का चित्रण तथा केतुविश्वनाथ रेड्डी के लेखन में श्रम एवं अशांति के मुद्दे विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सुश्री वोल्गा, सुश्री कल्पना कन्नाबिरन, डॉ. एन. गोपी तथा श्री के.पी. राधाकृष्णन

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी. मृणालिनी ने की, जिसमें श्रीमती वोल्गा, डॉ. मल्लेश्वरी, डॉ. के. मधुज्योति, श्री नारायण शर्मा, डॉ. के. श्रीदेवी एवं डॉ. ढासारि अमरेंद्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पठित आलेख औपनिवेशिक युग के क़ानूनों एवं उसके इर्द-गिर्द की कथावस्तुओं, कालीपटनम रामाराव की कहानियों में जनमूल्य और सांविधानिक मूल्यों का द्वंद्व; कोलकालूरी इनोक की कहानियों में जातिप्रथा, बालश्रम एवं स्त्री अधिकार तथा अट्टादा अप्पल नायडु और केशव रेड्डी की कहानियों पर केंद्रित थे।

तृतीय सत्र प्रो. एस.वी. सत्यनारायण की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. के.पी. अशोक कुमार, डॉ. ए. के. प्रभाकर, डॉ. जे. नीरजा, डॉ. राजु नायक तथा डॉ. शाहजहाँ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पठित आलेखों में *जिगरी* (पी. अशोक कुमार), *बाथुकुपोरु* (बी.एस. रामुलु) तथा *स्वेच्छा* (वोल्गा) नामक कृतियों पर व्यापक विमर्श प्रस्तुत किया गया।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. अम्मांगी वेणुगोपाल ने की, जिसमें डॉ. सूर्या, डॉ. के. कोटेश्वर राव, डॉ. याकूब, डॉ. विनोदिनी और डॉ. सीतारत्नम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन आलेखों में गोगु श्यामला, सतीश चेंदर, डॉ. विमला, येंदलूरी सुधाकर तथा कुप्पिली पद्मा की कृतियों पर विशेष रूप से विमर्श किया गया।

समापन पक्ष अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। श्रीमती वोल्गा ने समाहार वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी के.पी. राधाकृष्णन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिंदी के बीच साहित्यिक अनुवाद : स्थिति, चुनौतियाँ और मूल्यांकन' विषयक संगोष्ठी

3-5 नवंबर 2014, वर्धा

साहित्य अकादेमी ने महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 3-5 नवंबर, 2014, वर्धा में हबीब तनवीर सभागार में "दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिंदी के बीच साहित्यिक अनुवाद : स्थिति, चुनौतियाँ और मूल्यांकन" पर एक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए अनुवाद के क्षेत्र में साहित्य अकादेमी द्वारा की गई पहलक़दमियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक श्री सूर्य प्रसाद दीक्षित ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिंदी के बीच हुए परस्पर अनुवाद के

इतिहास और वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। मगांअंहिविवि के कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर ने कई प्रकार के अनुवादों के बारे में बताया। लेकिन उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अनुवाद का सही अभिप्राय होता है दो संस्कृतियों के बीच आवाजाही। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने बतौर मुख्य अतिथि अनुवाद के अनेक प्रकार्यों का ज़िक्र किया और बताया कि कैसे इस तरह के प्रकार्य दक्षिण और उत्तर भारत के लोगों/समुदायों को आपस में जोड़ने में शांतिपूर्ण तरीके से मददगार हो सकते हैं।

प्रो. जी. गोपीनाथन ने अपने बीज भाषण में बताया कि किस तरह अनुवाद के ये प्रकार्य अनुवादकों को अनुवाद कला में और अधिक सक्षम और दक्ष करने में मददगार हो सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्रा ने सत्र की अध्यक्षता की जबकि डॉ. अनवर अहम सिद्दिकी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. कट्टीमणि ने की, जिसमें श्री सिद्धलिंग पट्टन शेट्टी, श्री जे.एल. रेड्डी, प्रो. नागलक्ष्मी, श्रीमती पद्मावती और प्रो. अच्युतन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनमें उन्होंने क्रमशः कन्नड और हिंदी के बीच अनुवाद, तमिऴ और हिंदी साहित्य के बीच अनुवाद, तेलुगु और हिंदी साहित्य के बीच अनुवाद तथा मलयाळम् और हिंदी साहित्य के बीच अनुवाद जैसे विषयों पर समान रूप से प्रकाश डाला। दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री बीडी कृष्णन नांबियार ने दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिंदी अनुवाद का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। श्री शराजू और श्री रामप्रकाश यादव ने भी दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिंदी अनुवाद पर अपने विचार रखे। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री बालशौरि रेड्डी ने की, जिसमें श्रीमती ललितांबा बी. वाई (कन्नड), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (मलयाळम्) और श्री एच. बालसुब्रमण्यम (तमिऴ) जैसे अनुवादकों ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए दक्षिण भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री वाई वेंकटरमण ने की, जो 'साहित्यिक अनुवाद की चुनौतियाँ' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में चार प्रसिद्ध अनुवादकों श्री भालचंद्र जयशेट्टी, श्री वी. टी. वी. मोहन, श्री शौरि राजन और डॉ. सुमनलता ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए क्रमशः 'कन्नड-हिंदी अनुवाद की चुनौतियाँ', 'मलयाळम् हिंदी अनुवाद की चुनौतियाँ', 'तमिऴ हिंदी अनुवाद की चुनौतियाँ' और 'तेलुगु हिंदी अनुवाद की चुनौतियाँ' पर समान रूप से प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय के प्रो. गोपालराम ने भी इस अवसर पर आलेख प्रस्तुत किया। पाँचवाँ सत्र 'साहित्यिक अनुवाद के मूल्यांकन' पर केंद्रित था, जिसमें श्री टी. आर. भट्ट, श्रीमती अलामेलु कृष्णन, डॉ. मंजुला और श्री देवी सूर्या ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए मूल्यांकन पद्धतियों और तकनीक की स्थिति और चुनौतियों का 'कन्नड़ हिंदी अनुवाद', 'तमिऴ हिंदी अनुवाद', तेलुगु हिंदी अनुवाद' और 'मलयालम हिंदी अनुवाद' पर पड़नेवाले प्रभाव जैसे संदर्भों पर प्रकाश डाला। प्रो. गिरीश्वर मिश्र और श्री सूर्य प्रसाद दीक्षित ने संयुक्त रूप से समापन सत्र की अध्यक्षता की। श्री एन. सुंदरम् ने बतौर मुख्य अतिथि अनुवाद कार्य के उद्देश्य, उपयोगिता और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। श्री प्रभाशंकर प्रेमी ने भी इस सत्र में अपने विचार रखे। संगोष्ठी के अंत में विवि की डॉ. सी. अन्नपूर्णा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

कॉल्डवेल की 200 वीं जयंती पर संगोष्ठी

5-6 नवंबर 2014, तंजावुर

साहित्य अकादेमी ने तमिऴ विश्वविद्यालय के सहयोग से 5-6 नवंबर, 2014 को तंजावुर में बिशॅप रॉबर्ट कॉल्डवेल की 200 वीं जयंती मनाने के लिए एक दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की।

साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलानगोवन ने उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों का

बाएँ से दाएँ : श्री कामरासु, सुश्री के. तिलकवती, श्री जेम्स आर. डैनियल, प्रो. के. नाचिमुथु, प्रो. एम. तिरुमलै, श्री जे. अरंगस्वामी तथा श्री ए. एस. इलानगोवन

स्वागत करते हुए उनका परिचय श्रोताओं से कराया। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने कॉल्डवेल के तमिऴ साहित्य में दिए गए योगदान पर संक्षेप में प्रकाश डाला और अकादेमी द्वारा तमिऴ साहित्य के प्रोत्साहन स्वरूप ली गई अनेक पहलक़दमियों का ज़िक्र किया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री आर. कामरासु ने संगोष्ठी का विषय प्रवेश करते हुए संगोष्ठी के उद्देश्य को रेखांकित किया। तमिऴ विवि के कुलपति प्रो. एन. तिरुमलै ने कॉल्डवेल के द्रविड़ भाषा विज्ञान में दिए गए नेतृत्वकारी योगदान का उल्लेख किया। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. जेम्स आर. डेनियल ने बीज भाषण दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने की, जिसमें सर्वश्री एन. रामचंद्रन, ए. शिवा सुब्रमणियन और जी. स्टीफन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी विद्वानों ने कॉल्डवेल के शानार चित्रण, मिशन इतिहास, कॉल्डवेल का इतिहास लेखन और 'कॉल्डवेल और इदयानकुडी का मूल्यांकन' पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री एस. वी. शनमुगम् ने की, जिसमें सर्वश्री आर. संबथ, पी. मथैय्यन और के. अरानगन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन वक्ताओं ने 'कॉल्डवेल का प्राच्यवाद', 'कॉल्डवेल के नज़रिए से तमिऴ भाषा विज्ञान' तथा 'कॉल्डवेल और द्रविड़ भाषा विज्ञान' जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। श्री एस.वी. शनमुगम् ने भी इस सत्र में आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने 'कॉल्डवेल से पहले और बाद का भाषा विज्ञान' विषय पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री वी. आरसू ने की, जिसमें श्री पी. वेलसानी और फ़ादर अमुकन डिगल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन वक्ताओं ने 'कॉल्डवेल और 19वीं शताब्दी का तमिऴ साहित्य तथा 'कायल और कोरकै के कॉल्डवेल की अवधारणा' जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री वी. आरसु ने भी अपना आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने 'इतिहास और द्रविड़वाद के सिद्धांत' पर प्रकाश डाला। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री आर. संबथ ने की, जिसमें सर्वश्री रमा गुरुनाथन, एम. वेद सागय कुमार और जी. बालसुब्रमणियन जैसे विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन विद्वानों ने 'कॉल्डवेल की दृष्टि में पॉलिगर', 'कॉल्डवेल के साहित्य के प्रकाशन में आई बाधाएँ' और 'कॉल्डवेल के दूसरे संस्मरण में फुटनोट्स' जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। समापन सत्र में श्री ए.एस. इलानगोवन ने विद्वानों और श्रोताओं का स्वागत किया। डॉ. सिर्पी बालसुब्रमणियन ने समापन भाषण दिया, जबकि डॉ. अपूर्वा जेनी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'परंपरा और आधुनिकतावाद के साथ अल्लामा का परीक्षण' विषयक परिसंवाद

7 नवंबर 2014, उडुपी

साहित्य अकादेमी ने अल्लामा प्रभु पीठ कंठावरा और गवर्नमेंट फ़र्स्ट ग्रेड कॉलेज, उडुपी के सहयोग से 7 नवंबर 2014 को उडुपी के फर्स्ट ग्रेड कॉलेज में 'परंपरा और आधुनिकता के साथ अल्लामा का परीक्षण' विषयक परिसंवाद आयोजित किया। साहित्य अकादेमी के श्री एल. सुरेश कुमार ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। कन्नड के प्रसिद्ध लेखक और आलोचक डॉ. बसवराज कालगुड़ी ने अपने उद्घाटन भाषण में सदियों से कन्नड की काव्य-परंपरा में अमर रहे अल्लामा प्रभु के जीवन, कृतित्व और प्रभाव का ज़िक्र किया। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अल्लामा प्रभु के समय की सामाजिक परिस्थितियों का ज़िक्र किया। बालासुब्रह्मण्यम ने अल्लामा प्रभु के 21वीं शताब्दी में भी प्रासंगिक होने का ज़िक्र किया। अल्लामा प्रभु पीठ के निदेशक डॉ. ना. मोगासाले ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए अल्लामा प्रभु के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जयप्रकाश माविनाकुली ने भी सत्र में अपने विचार रखे। प्रथम सत्र में डॉ. चंद्रशेखर नांगली और डॉ. एच. शशिकला ने क्रमशः 'अल्लामा प्रभु और नाथ पंथ' तथा 'अल्लामा में जादुई प्रकार' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में डॉ. नटराज बुडाल और श्री लक्ष्मी शॉ थोलपड़ी ने 'अल्लामा प्रभु और बौद्ध दर्शन' और 'अल्लामा प्रभु के प्रभाव' शीर्षक आलेखों का पाठ किया। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जयप्रकाश माविनाकुली ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. मालती पट्टन शेट्टी ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। श्री मुद्दु मोहन ने वचन पाठ किया।

सर्वश्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य, मुद्दु मोहन, ना. मोगासाले, बसवराज कलगुड़ी, जयप्रकाश माविनाकुली, योगानंद तथा एल. सुरेश कुमार

अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार पर परिसंवाद

12 नवंबर 2014, देवघर

साहित्य अकादेमी ने रमादेवी बाजला महिला कॉलेज, देवघर (झारखंड) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार' विषय पर 12 नवंबर 2014 को देवघर में एक परिसवांद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्य श्रीमती रीता राय ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अनुवाद के क्षेत्र में अकादेमी द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया। सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका के कुलपति प्रो. क़मर अहसन ने अपने उद्घाटन भाषण में अनुवाद की महत्ता एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने अकादेमी को झारखंड में इस परिसंवाद के आयोजन पर बधाई दी। रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता के डॉ. सुधीर कुमार धर ने अपने बीज भाषण में अनुवाद के विभिन्न पक्षों एवं चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए सिद्धांत एवं व्यवहार के विरोधाभास को रेखांकित किया।

प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता प्रो. अमिताव राय ने की, जिसमें प्रो. मोहित कुमार राय और प्रो. कालिदास मिश्र ने क्रमशः 'एक कवि अनुवादक के रूप में रवींद्रनाथ ठाकुर' तथा 'अनुवाद का आनंद एवं चुनौतियाँ' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. मोहित कुमार राय ने की, जिसमें प्रो. अमिताभ राय एवं प्रो. अमृत सेन ने अपने विद्वतापूर्ण आलेख प्रस्तुत किए। रमा देवी बाजला महिला कॉलेज के प्रो. अरविंद कुमार झा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

कुंज बिहारी दास जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

15 नवंबर 2014, कटक

साहित्य अकादेमी द्वारा उत्कल साहित्य समाज के सहयोग से ओड़िया के प्रख्यात लोकसाहित्यविद् कुंज बिहारी दास की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 15 नवंबर 2014 को शताब्दी भवन, कटक में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. विजयानंद सिंह ने की, जबकि मुख्य अतिथि श्री जगन्नाथ प्रसाद दास ने कुंज बिहारी दास के विभिन्न योगदानों के बारे में बात करते हुए लोक साहित्य में उनके योगदान की कुछ अनोखी विशेषताओं पर प्रकाश डाला। अपने बीज वक्तव्य में प्रो. नित्यानंद सत्पथी ने कुंज बिहारी दास के काव्यात्मक योगदान पर प्रकाश डाला। सत्रांत में उत्कल साहित्य समाज के उपाध्यक्ष श्री देवासन दास ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र कुंज बिहारी दास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. आदिकंद साहू ने की। इस सत्र में श्रीमती सविता प्रधान, श्री लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, श्रीमती वीणापाणि सिंह एवं श्री मनोज पटनायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. गगनेंद्रनाथ दास ने की, जिसमें बसंत पंडा, श्रीमती श्रुति दास, डॉ. श्रीचरण एवं डॉ. गोविंद चंद्र चांद ने लोकसाहित्य में कुंज बिहारी दास के योगदान तथा लोकपरंपरा एवं यात्रा वृत्तांत का इतिहास विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत किए गए आलेखों पर विद्वानों द्वारा खुलकर चर्चा हुई तथा कई प्रश्न उभरकर सामने आए। ये प्रश्न शोध छात्रों के लिए साहित्य के नए द्वार खोलने का काम करेंगे।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. खगेश्वर महापात्र ने की, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. रामबहल तिवारी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. कृष्णचंद्र बेहरा उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन श्री जीवनानंद अधिकारी ने किया।